अगस्त 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

# खुशबू की राह पर

नन्हीं सी चन्दना पुराने चन्दन वृक्ष के कुछ पत्तों को सूंघती है। ''ऊंह!'' वह कहती है। ''तुम चन्दन नहीं हो। तुममें चंदन की खुशबू नहीं है। तुम मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश कर रहे हो !''

''हा, हा !'' पुराना वृक्ष हँसता है। ''मेरी खुशबू मेरे पत्तों में नहीं है। यह मेरे अन्तः काष्ठ में है, मेरी जड़ों में है। अन्तःकाष्ठ, ध्यान दो, छाल नहीं है या रस काष्ठ नहीं है। यह छाल से ढका हुआ काष्ठ होता है। और मेरी जड़ों में इतना तेल होता है कि चन्दन के पेड़ को कभी नहीं काटा जाता। इसे केवल जड़ से उखाड़ा जाता है, जिससे तेल से भरी जड़ें व्यर्थ न जायें।''

चन्दन का तेल, एक पृथक, तीव्र और मधुर गन्ध के साथ पीलापन लिए एक चिपचिपा तरल पदार्थ है। इसकी गन्ध बहुत समय तक रहती है। चन्दन के तेल में मुख्यतः सन्तालोल नाम का मादक तत्व होता है। चन्दन की खुशबू और इसकी औषधीय सम्पदा सन्तालोल से मिलती है। सर्वोत्कृष्ट चन्दन के तेल में ९० प्रतिशत सन्तालोल की मात्रा होती है।



### अपने चन्दन को जानो

नीचे दिये गये वाक्यों में से कौन सही है, और गलत?

१. चन्दन का तेल गुलाब और चमेली जैसे अन्य प्राकृतिक सुगन्धित पदार्थों के तेल के साथ इत्र बनाने के काम में प्रयुक्त होता है।

२. चन्दन का तेल आइसक्रीम जैसे आहार में संयोजी के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

३. चन्दन का लेप बुखार और सिरदर्द की चिकित्सा में ललाट पर लगाया जाता है।

*उत्तर : केवल क्रम-२ गलत है।*

PIRANHA
ACTIVE
CADET HX
YANKEE
ROBO COP
HERO
Heroes start early.
Ride, race, take a tumble or even take a fall.
Because it's never too early to be a hero.
HERO CYCLES

# गुफाओं के बारे में

हे, क्या तुम जानते हो गुफाएँ क्या होती हैं? ये धरती पर प्राकृतिक रूप से बने हुए रिक्त स्थान होते हैं, सामान्य रूप से इतने बड़े कि उसमें मनुष्य प्रवेश कर सके।

आओ, आन्ध्र प्रदेश के करनूल जिले में स्थित बेलुम गुफाओं की यात्रा पर चलें। समतल भूमि पर यह भारत की सबसे लम्बी गुफा-प्रणाली है। अनुमानतः यह ३ कि.मी. लम्बी है जिसमें से २ कि.मी. का क्षेत्र सुगम्य है। तुम्हें निस्सन्देह मालूम है कि एक गुफा प्रणाली एक स्थान पर एक दूसरे से जुड़ी हुई कई गुफाओं का सिलसिला होती है।

बेलुम की गुफाओं में लम्बे घुमावदार मार्ग हैं जो अकस्मात् विशाल लम्बे-चौड़े कमरों में खुलते हैं जहाँ ताजे जल की वीथियाँ और नलियाँ हैं, छत से लटकते हुए विलक्षण आरोही निक्षेप हैं और गुफा की फर्श पर खड़े रहस्यमय निलम्बी निक्षेप हैं।

जब कार्बन डायोक्साइड से मिला हुआ जल पिघलता है या गुफा में चूनापत्थर को पिघलाता है, तब गुफा की भीतरी छत से नमी टपकती है और इसमें से खनिज पदार्थ जल के साथ मिलकर हिमवर्तिका जैसे ट्यूब्स बन जाते हैं, जिन्हें आरोही निक्षेप कहते हैं। जब गुफा की फर्श पर जल टपकता है तब बून्दों से नीचे छोटा टीला बन जाता है। उन्हें निलम्बी निक्षेप कहते हैं।

आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम ने बेलुम गुफाओं को एक मनोरम पर्यटन स्थल में परिवर्तित कर दिया है। निगम ने अन्दर का पतला कीचड़, साफ कर दिया है, पथ का निर्माण कर दिया है और विस्मयकारी दृश्य को उद्घाटित करने के लिए गुफाओं को प्रकाशित कर दिया है। गुफा के अन्तरतम अवकाशों में ताजी हवा की निरन्तर आपूर्ति निश्चित करने के लिए शाफ्ट का प्राविधान है, जिसे भरने के लिए शक्तिशाली ब्लोअर्स रखे गये हैं।

आयें, सोपान पंक्तियों की सहायता से बेलुम गुफाओं में प्रवेश करें।

गुफा-प्रणाली का प्रथम कक्ष सिंहद्वारम कहलाता है। यह स्थान एक छोटे पर सुन्दर जलाशय, जल प्रपात और एक फव्वारा से शोभायवान है। गुफा-प्रणाली का यह सबसे बड़ा कक्ष है और यह ९ मीटर ऊँचा है।

एक दूसरा कक्ष, मंडपम, जमीन के नीचे है जो आरोही निक्षेपों से सुसज्जित है।

वहाँ से एक अन्य कक्ष पाताल गंगा के लिए मार्ग है, जहाँ एक छोटा जल प्रपात है।

गुफाओं की छत कई स्थानों पर २० मी. तक ऊँची है। अन्तरतम अवकाश में एक चैनल है जो भीतरी छत के साथ-साथ घुमावदार होता गया है। इसके सौन्दर्य को निखारने के लिए चैनल को प्रकाशित कर दिया गया है।

एक घुमावदार सीढ़ी से हम आरोही निक्षेपों से भरे हुए कक्ष में जाते हैं, जिसे कोटिलिंगम कहते हैं। आरोही निक्षेपों का समूह ऊपर से नीचे की ओर लटके हुए हिमालय का लघु प्रतिरूप जैसा दिखाई देता है। तुम आरो

# बेलुम की गुफाएँ

## प्रकृति का आश्चर्य!

निक्षेपों को आश्चर्यजनक ज्योतिर्मय रंगों में भी देख सकते हो। अपने अन्तर्निहित खनिज तत्वों के कारण ही ये रंगीन दिखाई देते हैं।

ये लाखों वर्ष पुरानी गुफाएँ आधुनिक समय में पहली बार सन् १८८४ में एक अंग्रेज भूवैज्ञानिक रॉबर्ट ब्रूस फुट द्वारा वर्णित की गईं। लगभग एक शताब्दी के पश्चात सन् १९८२-८३ में एक जर्मन वैज्ञानिक डेनियल जेबौर के नेतृत्व में गुहा वैज्ञानिकों के एक दल ने इसकी पूरी तरह खोजबीन की। तुम जानना चाहेंगे कि गुहा विज्ञान भौतिक शास्त्रीय, भूवैज्ञानिक और प्राणि वैज्ञानिक दृष्टियों से गुफा का वैज्ञानिक अध्ययन है। सन् १९९९ में निगम ने इन गुफाओं को एक सुविधाजनक पर्यटन आकर्षण में बदलने का उत्तदायित्व लिया। निश्चय कर लो कि बेलुम गुफाओं का भ्रमण अवश्य करोगे। प्राकृतिक भव्यता के ये अविस्मरणीय दृष्टान्त हैं।
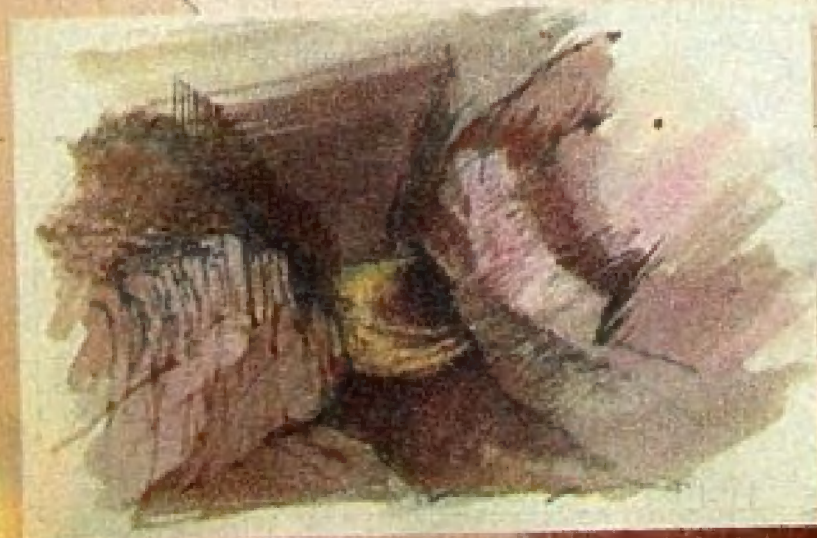
**स्थिति:** बेलुम ग्राम के निकट, कोलिमिगुंडला मंडल, करनूल जिला। निकट के नगरों से बसें उपलब्ध हैं। करनूल से बनगनपल्ली होकर ११० कि.मी./ नन्दयाल से ६० कि.मी./ताड़ीपत्री से ३१ कि.मी./अनन्तपुर से ८४ कि.मी./ बंगलोर से २७० कि.मी.। आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम स्कूल के छात्रों के लिए गुफा-भ्रमण की व्यवस्था कर सकता है या परामर्श दे सकता है।

# विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ अगस्त - २००२ सञ्चिका - ८

माधव की महिमा १९

राजकुमारी के लिए चुनौती २५

माया सरोवर ११

मुस्कान सच्चा सौंदर्य २८

## अन्तरङ्गम्



**SUBSCRIPTION**

**For USA and Canada**
**Single copy $2**
**Annual subscription $20**
***Remittances in favour of***
***Chandmama India Ltd.***
**to**
**Subscription Division**
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

**शुल्क**

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

*इस पत्रिका में विज्ञापन देने हेतु कृपया सम्पर्क करें :*

चेन्नई
फोन : 044-234 7384
234 7399
**e-mail : advertisements@chandamama.org**

दिल्ली
*मोना भाटिया*
फोन : 011-651 5111
656 5513/656 5516

मुम्बई
*शकील मुल्ला*
मोबाइल : 98203-02880
फोन : 022-266 1599
266 1946/265 3057

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

# राष्ट्र के प्रति निष्ठा

भारतवर्ष पिछले ५५ वर्षों से एक स्वाधीन राष्ट्र है। हमलोग अनेक अविकसित और अल्पविकसित राष्ट्रों से बहुत आगे बढ़ गये और विकासशील राष्ट्र कहलाये। अन्तरिक्ष शिल्प विज्ञान तथा आण्विक निवारकों के निर्माण के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियों की सर्वत्र प्रशंसा की गई।

जबकि यह हरेक भारतीय के लिए अपने देश पर स्वभावतः गर्व करने की बात है, इसका एक दूसरा पहलू भी है जिसपर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। क्या हमलोग अपने देश के पुरातन अतीत से भटक नहीं गये हैं? गाँधीजी ने एक बार कहा था : "मैं अपने घर के चारों ओर दीवारें खड़ी नहीं करना चाहता और न खिडकियों को बंद कर देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि विश्व के सभी देशों की संस्कृतियाँ मेरे घर में से निर्बाध बहें, लेकिन मेरे पाँव उनके साथ न बह जायें।" गाँधीजी के समान ही स्वामी विवेकानन्द ने भी भारतीयों को "अपनी परम्परा, संस्कृति और विशिष्ट पहचान की रक्षा करने, उसे सुरक्षित रखने, विकसित करने तथा उसे मजबूती से पकडे रहने" का उपदेश दिया था।

जापान और जर्मनी के दृष्टान्त हमारे सामने हैं। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात वे पूरी तरह तबाह हो गये थे। फिर भी, जो लोग बच गये, वे राष्ट्र के प्रति निष्ठावान बने रहे। उन दोनों देशों को पुनर्जीवित होने में दस वर्षों से अधिक समय नहीं लगा।

हर राष्ट्र अपनी शक्ति अपनी जनता से ग्रहण करता है। देश की आजादी की ५५वीं जयन्ती पर यह हमें याद रखना चाहिए और भारत को और अधिक सशक्त बनाने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

---

सम्पादक : *विश्वम*

**Visit us at : http://www.chandamama.org**
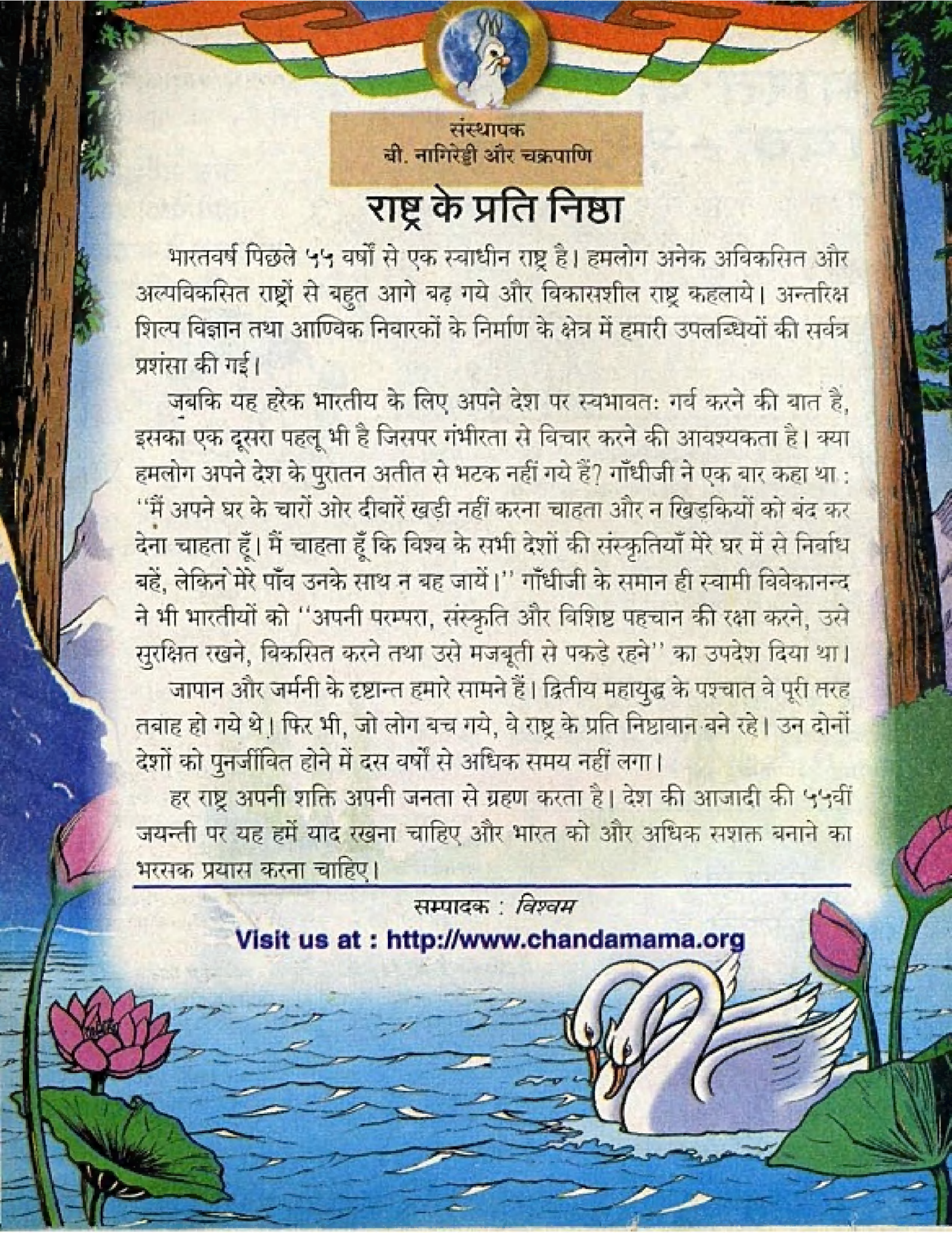
'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

# भारत के नायक - ११

आधुनिक भारत में तुम्हें अनेक नायक मिलेंगे। उनमें से कुछ यहाँ दिये गये हैं। क्या तुम उन्हें जानते हो?

**तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।**

1. मैं एक मात्र भारतीय फिल्म निर्देशक हूँ जिसे जीवन भर की उपलब्धि के लिए ऑस्कर एवार्ड मिला है। यह मुफ्त ही मिल गया, है न? मेरा नाम बताओ।

------------------------------------------

2. मुझे १९८७ में प्रथम विश्व आहार पुरस्कार मिला। मुझे लोग हरित क्रांति के जनक के रूप में भी जानते हैं। मैं कौन हूँ?

------------------------------------------

3. मैं एक विशिष्ट मराठी नाटक रचनाकार हूँ। मेरे नाटक मुक्के (पंच) के लिए विख्यात हैं। क्या तुम मुझे जानते हो?

------------------------------------------

4. मैं प्रथम भारतीय अन्तरिक्ष यात्री हूँ। तुम्हें और किसी संकेत की आवश्यकता नहीं है। मेरा नाम बताओ।

------------------------------------------

5. मेरा नाम ओडिसी नृत्य का पर्याय बन गया है। मुझे 'पद्मश्री' और 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया है। मेरा नाम क्या है?

------------------------------------------

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय आधुनिक नायक .............................................. है,

क्योंकि ..............................................

प्रतियोगी का नाम: ..............................................

उम्र: .............. कक्षा: ..............................................

पूरा पता: ..............................................

..............................................

पिन: .............................. फोन: ..............................

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ..............................................

अभिभावक के हस्ताक्षर: ..............................

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ सितम्बर से पूर्व भेज दें-

**हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-११**
**चन्दामामा इन्डिया लि.**
**नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी**
**ईकाडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.**

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुई तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

# एक वैज्ञानिक-राष्ट्रपति

भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम देश के सबसे बड़े वैज्ञानिकों में से एक हैं। ये २५ जुलाई को देश के प्रथम नागरिक बने। यह सम्भवतः किसी वैज्ञानिक के राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर आसीन होने का सबसे पहला दृष्टान्त है।

डॉ. अबुल पकीर जैनुलबदीन अब्दुल कलाम ने सन् १९३१ में रामेश्वरम के एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लिया। उनके पिता के पास दो यात्री नावें थीं जो रामेश्वरम और धनुषकोटि के मध्य चला करती थीं। अपने माता-पिता के सात सन्तानों में से सबसे छोटे अब्दुल ने रामेश्वरम के एक क्रिश्चियन मिशनरी स्कूल से माध्यमिक परीक्षा पास की। फिर त्रिचनापल्ली के सेंट जोसेफ्स कॉलेज से भौतिक शास्त्र में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अब्दुल कलाम ने विमान-विज्ञान का अध्ययन करने के लिए मद्रास प्रौद्योगिकी संस्थान (मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) में दाखिला लिया।

स्नातकोत्तर उपाधि ग्रहण करने के पश्चात उन्होंने रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डिफेंस रिसर्च ऐण्ड डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन) में पद भार ग्रहण किया जिसकी उन्होंने ४० वर्षों तक सेवा की। वे 'अग्नि' और 'पृथ्वी' जैसे प्रक्षेपणास्त्रों के उत्पादन-प्रभारी थे। इस कार्यक्रम की सफलता ने उन्हें 'मिसाइल मैन' के रूप में लोकप्रिय बना दिया। पोखरान में आणविक अन्तःस्फोट की सफलता के लिए भी इन्हें ही श्रेय दिया जाता है। अपने जीवन के चरमोत्कर्ष पर इन्होंने भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार के पद का कार्यभार संभाला। राष्ट्र ने इन्हें देश के सर्वोच्च असैनिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से विभूषित किया।

सेवानिवृत होने के पश्चात डॉ. अब्दुल कलाम ने बच्चों और तरुणों के साथ अपना समय बिताने की इच्छा व्यक्त की। वे प्रायः शैक्षणिक संस्थाओं का भ्रमण करते थे और देश के भविष्य के विषय में छात्रों को संबोधित करते थे। गाँधीजी के जन्म स्थान पोरबंदर में एक लड़की के संदेश माँगने पर इन्होंने कहा, "हरेक को इस विचार के साथ विकसित होना चाहिए कि राष्ट्र व्यक्ति से ऊपर होता है।" इस बात पर उन्होंने बराबर बल दिया कि वे सर्वप्रथम और सर्वोपरि भारतीय हैं और यह बताया कि सन् २०२० तक भारत को पूर्णरूपेण विकसित राष्ट्र बनाने का मेरा सपना है।

कहा जाता है कि डॉ. कलाम उर्दू में कुरान-पाठ करने में दक्ष हैं तथा उतनी ही प्रवीणता से वे संस्कृत में भागवत गीता का वाचन भी कर सकते हैं। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि वे वीणा वादक हैं।

सन् १९४७ में १५ अगस्त को प्रकाशित राष्ट्रीय झंडा फहराते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू के, तथा दंगाग्रस्त नोआखाली की गलियों में घूमते हुए गाँधीजी के दो चित्रों को याद करते हुए वे टिप्पणी करते : "एक असाधारण विशेषता का नेतृत्व होना चाहिए।" भारत के पास ऐसा नेता है। चन्दामामा अपने हजारों पाठकों की ओर से डॉ. अब्दुल कलाम को शुभ कामनाएँ भेजता है।

# कम उम्र

विजयपुरी विंध्यपर्वतीय प्रांतों में एक छोटा राज्य था। अड़ोस-पड़ोस के राज्य उस राज्य के प्रति शत्रु-भावना रखते थे। इस कारण राज्य में हमेशा युद्ध का वातावरण बना रहता था। तभी उस राज्य के प्रधान मंत्री की आकस्मिक मृत्यु हो गयी।

उसकी जगह पर नया प्रधानमंत्री नियुक्त हुआ। वह राजा को विवेकपूर्ण सलाह दिया करता था। फलस्वरूप विजयपुरी राज्य के संबंध अन्य राज्यों के साथ अच्छे होने लगे। शत्रुता की भावना आपस में कम होती गयी। एक दिन प्रधानमंत्री रमाकांत शर्मा ने राजा से कहा, ''महाराज, मैं काफ़ी बूढ़ा हो गया हूँ। मुझे इस पद से हट जाने की अनुमति दीजिए। मुझे लगता है कि कम उम्र का कोई समर्थ व्यक्ति इस राज्य का प्रधानमंत्री बने तो बेहतर होगा।''

राजा ने रमाकांत से और कुछ समय तक इस पद को संभालने के लिए कहा। पर रमाकांत ने अस्वीकार कर दिया। तब राजा ने रमाकांत शर्मा से कहा कि वही प्रधानमंत्री के लिए किसी योग्य व्यक्ति को चुन दें। पहले से ही तीन उपमंत्री अपना-अपना कार्यभार संभाल रहे थे। उनमें से एक को रमाकांत शर्मा ने प्रधानमंत्री पद के लिए चुन लिया।

रमाकांत शर्मा नब्बे साल का था। जिस मंत्री को उसने चुना, वह अस्सी साल का था। परंतु हाँ, उम्र में उससे तो कम ही था।

*- तपस्वी*
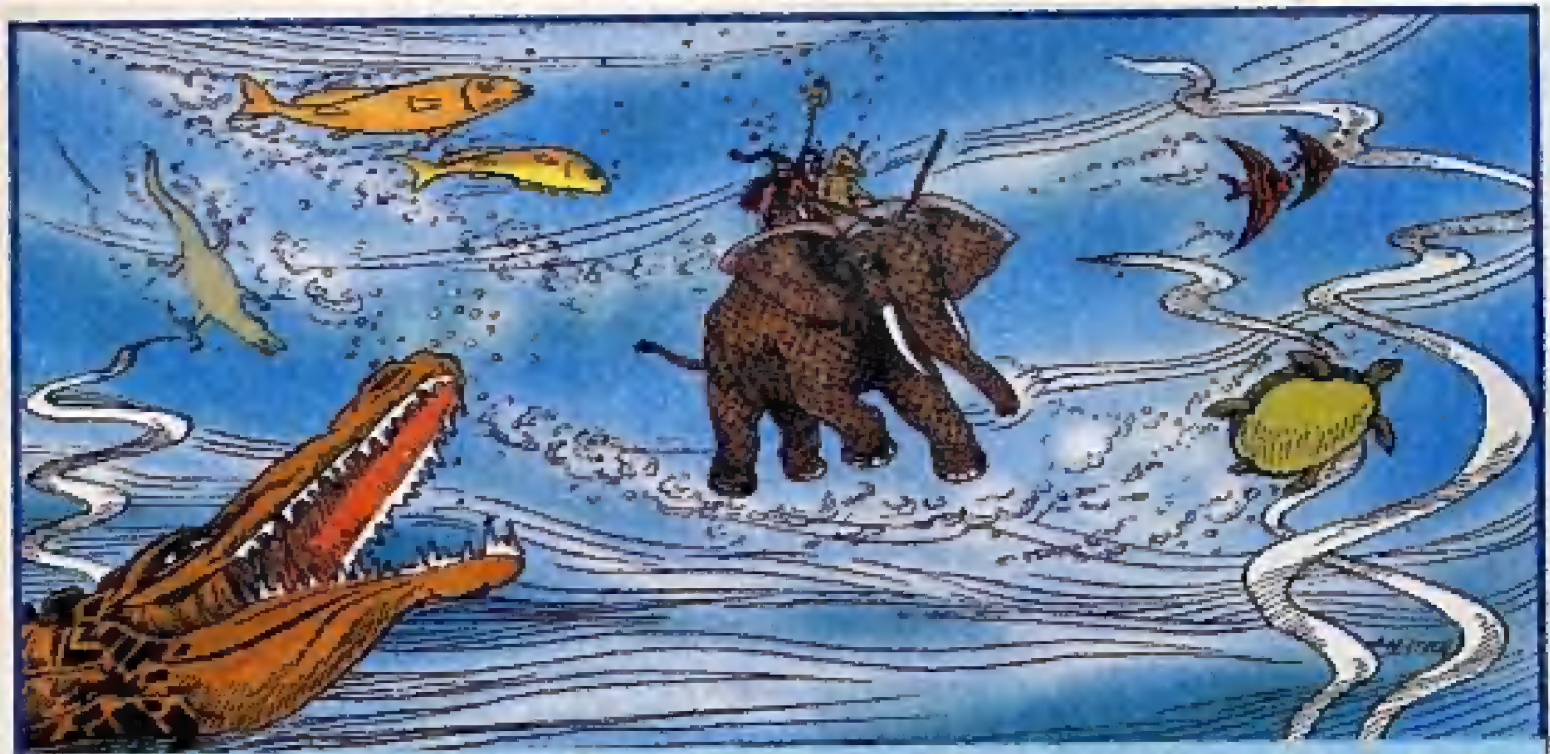
# माया सरोवर

## 7

(घुड़सवार सैनिकों के द्वारा जयशील को मालूम हुआ कि मंत्री धर्ममित्र पहाड़ी तालाब के पास ठहरे हुए हैं। मकरकेतु को भी अपने साथ वहाँ ले जाने का उसने निश्चय किया। मकरकेतु को लगा कि उसकी मौत निश्चित है। किसी भी हालत में वे उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए जलग्रह को पानी पिलाने का बहाना कर उसे तालाब के अंदर ले गया। जयशील और सिद्धसाधक भी उसके साथ-साथ तालाब में गये, क्योंकि उन्हें भय था कि वह कहीं धोखा न दे। पर ऐसा ही हुआ। जलग्रह सहित चारों अकस्मात् पानी में डूब गये।)

जलग्रह अकस्मात् पानी में ही सिर्फ नहीं डूबा बल्कि पानी के तले बड़ी तेजी से वह आगे भी बढ़ने लगा। जयशील और सिद्धसाधक को ऊपर आने का उसने मौक़ा ही नहीं दिया। सिद्धसाधक डर गया और जब उसे लगा कि मौत अटल है तो वह भय के मारे चिल्लाने लगा, "जय महाकाली"।

जयशील ने उसकी यह चिल्लाहट साफ़-साफ़ सुनी। सामने बैठा हुआ मकरकेतु भी उसे स्पष्ट दिखायी दे रहा था। इसका यह मतलब हुआ कि वह पानी के निचले भाग में है और वह निचला भाग उसे साफ़ दिखायी दे रहा है। उसे ध्वनियाँ भी सुनायी दे रही हैं। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

तुम दोनों पानी के अंदर हो, पर जिन्दा हो। क्या जानते हो, इसकी क्या वजह है?''

''हाँ, हाँ, समझ में आ गया। तुम्हारे जलग्रह से जब तक हम चिपके रहेंगे तब तक हम जैसे मानव भी साँस ले सकते हैं और ज़िन्दा रह सकते हैं,'' जयशील ने कहा। उसकी बातों से यह साफ़ था कि उसे कोई डर नहीं।

''तुमने सही समझा। तो फिर तलवार की मूठ पर तुम्हारा हाथ क्यों?'' मकरकेतु ने व्यंग्य भरे स्वर में पूछा।

''तुम्हारा सिर काटने के लिए। जलग्रह को पानी के ऊपर ले जाते हो या नहीं?'' कड़वे स्वर में जयशील ने पूछा।

सिद्धसाधक ने शूल उठाते हुए कहा, ''जय महाकाली, अब तक तुमने ऐसा भक्त नहीं देखा होगा, जिसने पानी के तले तुम जैसे किसी प्राणी की बलि चढ़ायी हो। आज वह अद्भुत घटना यहाँ घटनेवाली है,'' कहते हुए उसने शूल को मकरकेतु के गले से सटाया।

मकरकेतु ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''तुम्हारी आज्ञा का पालन नहीं करूँगा। क्या इसके लिए तुम दोनों मेरा सिर काट दोगे? अगर तुमने ऐसा किया तो याद रखना कि पानी के अंदर जीने की तुम्हारी शक्ति क्षीण हो जायेगी। फिर तुम दोनों की लाशें पानी पर तैरेंगी।''

मकरकेतु की इन बातों से वे दोनों समझ गये कि अब हम मकरकेतु के हाथों बंदी हैं। उन्हें डर भी लगने लगा।

जयशील ने मकरकेतु का कंधा पकड़ लिया और कहा, ''अरे दुष्ट, तुमने यह क्या कर दिया? हमें पानी में डुबोकर मार डालना चाहते हो?''

मकरकेतु ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''जयशील, हम अब पानी के निचले भाग में हैं। क्या मानव पानी के इतने निचले भाग में रहते हुए भी साँस ले सकता है? बोल सकता है? देख सकता है?''

जलग्रह सीधे तेज़ी से आगे बढ़ा जा रहा था। सामने पानी के नीचे की एक पहाड़ी गुफ़ा से तेज़ी से जल प्रवाहित हो रहा था।

जलग्रह पर सवार मकरकेतु चिल्ला पड़ा 'जलग्रह'। उसे पहाड़ी गुफ़ा की तरफ़ दौड़ाते हुए बोला, ''जयशील, सिद्धसाधक, बोलते क्यों नहीं? चुप क्यों हो गये? सोच में पड़ गये क्या?

"जयशील, तुम दोनों मेरे क़ैदी नहीं हो। मैं भी तुम लोगों का क़ैदी नहीं हूँ। जलग्रह जब पानी में से होता हुआ उस पार के पहाड़ के जलाशय में पहुँचेगा, तब तुम दोनों निर्विघ्न जा सकते हो।"

आधे घंटे के अंदर जलग्रह जलाशय में पहुँचा। मकरकेतु की आज्ञा के अनुसार जलग्रह पानी पर तैरने लगा और सूंड उठाकर ज़ोर से चिंघाड़ने लगा।

जयशील और सिद्धसाधक ने ज़ोर से साँस खींची और अपने ज़िन्दा होने पर बहुत खुश हुए। जयशील ने मकरकेतु से कहा, "मकरकेतु, क्या यही माया सरोवर है?"

उसने जयशील की ओर मुड़ते हुए कहा, "जयशील, यह माया सरोवर नहीं है। जिन मानवों ने उसे देखा है, वे अब तक ज़िन्दा नहीं लौटे।"

जयशील कुछ और पूछने ही जा रहा था कि इतने में मकरकेतु चिल्ला उठा, "जलग्रह"।

जयशील और सिद्धसाधक को जब यह मालूम हुआ कि वे विपत्ति में फंसने ही वाले हैं, तो दोनों जलग्रह से नीचे कूद पड़े और पानी में तैरते हुए जाने लगे। उन्होंने देखा कि एक वृक्ष जल-प्रवाह में बहता आ रहा है, दोनों ने उसे पकड़ लिया। वे गिरते-उठते हुए उस वृक्ष की शाखाओं पर चढ़ बैठे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि वृक्ष के तने पर एक बाघ अपने आगे के पैरों से वृक्ष की शाखा को पकड़कर

उल्टा लटक रहा है। वृक्ष पानी में डूबता हुआ और फिर से ऊपर उठता हुआ पास ही के जलप्रपात से होता हुआ नीचे गिरने लगा। जयशील और सिद्धसाधक को लगा कि ये उनके आख़िरी क्षण हैं और उन दोनों ने भय के मारे आँखें बंद कर लीं।

पहाड़ पर से होते हुए जहाँ जल प्रपात गिर रहा था, वहाँ छोटे-बड़े पत्थरों का ढेर था। वृक्ष के बीच का भाग टूट गया और वह वहाँ के एक बड़े पत्थर पर जा गिरा। फलस्वरूप उस शाखा के दो भाग हो गये। एक भाग पर जयशील था और दूसरे भाग पर सिद्धसाधक और बाघ। थोड़ी देर बाद जयशील ने आँखें खोलीं और चारों ओर देखा। उसके शरीर का आधा भाग अब पानी में था। उसका सिर एक

टीले के पास था। दूर से जल प्रपात की कलकल ध्वनि सुनायी दे रही थी।

"अरे, यह क्या? मैं ज़िन्दा हूँ!" सोचते हुए वह उठ खड़ा हो गया। अचानक उसे सिद्धसाधक की याद आ गयी। 'वह कहाँ होगा?' यों सोचते हुए उसने चारों ओर अपनी नज़र दौडायी। पर वह कहीं दिखायी नहीं पडा।

जयशील तितर-बितर उगी झाडियों में से होता हुआ थोड़ी दूर आगे गया। अकस्मात् उसे बाघ की गरज सुनायी पड़ी। तब उसे उस बाघ की याद आयी, जो जलप्रपात में फंस चुका था।

उसने म्यान से तलवार निकाली और उसी तरफ बढ़ता हुआ गया, जिस तरफ से बाघ की गरज आयी।

वहाँ जाने पर जयशील ने देखा कि सिद्धसाधक एक जगह पर बेहोश पड़ा है। बाघ के पीछे के दोनों पाँव घावों से भरे हुए थे और अगले पैरों पर रेंगता हुआ वह सिद्धसाधक की ओर बढ़ रहा था।

जयशील ने तुरंत एक पत्थर बाघ पर फेंका। पत्थर के लगते ही वह गरजता हुआ पीछे की ओर मुड़ा।

गरज की ध्वनि से सिद्धसाधक होश में आ गया। घबराते हुए उसने सिर उठाया तो देखा, बाघ बिल्कुल उसके सामने है। "रक्षा करो, महाकाली!" कहता हुआ वह चिल्ला पड़ा।

इतने में जयशील ने जान लिया कि बाघ के पीछे के दोनों पाँव टूट गये हैं। उसने उन दोनों पैरों को ज़ोर से पकड़ लिया और दूर तक खींचता ले गया। सिद्धसाधक उठ खड़ा हुआ और कहा, "जयशील, तुम यहाँ हो? बाघ की गरज की वजह से मुझमें जान आ गयी।"

पानी के एक किनारे पर साधक को अपना शूल मिल गया। जयशील से उसकी तलवार लेकर उसने कहा, "यह बाघ नरक यातना सह रहा है। प्राणों के लिए छटपटा रहा है। इसकी दुस्थिति मुझसे देखी नहीं जाती। इसे अभी इस पीड़ा से मुक्त कर रहा हूँ। इसी में पुण्य है," कहते हुए उसने एक ही बार में बाघ का सिर धड़ से अलग कर दिया।

जयशील चिंता में मग्न था। उसने आह भरते हुए कहा, "हमें मकरकेतु को छोड़ना नहीं चाहिए था।"

"जयशील, जो हो गया, सो हो गया। हमें अब जो हो गया, उसके बारे में नहीं, जो होना है, उसके बारे में सोचना चाहिए। अब सवाल तो यह है कि अब हम किस प्रदेश में हैं और यह कैसा प्रदेश है?" सिद्धसाधक ने कहा।

जयशील इसका जवाब देने ही वाला था कि इतने में नदी के नीचे के घने पेड़ों में से एक मानव का हाहाकार सुनायी पड़ा। साथ ही उन्हें सुनाई पड़ी पहाड़ी भेड़ों की चिल्लाहट।

"क्या पहाड़ी भेड़ों ने आदमी को पकड़ लिया? या आदमी ने ही पहाड़ी भेड़ों को अपने वश में कर लिया? लगता है, दोनों की जानों पर आफ़त आयी है। चलो, वहाँ चलते हैं," सिद्धसाधक ने कहा।

दोनों उस तरफ़ बढ़े, जिस तरफ़ से यह ध्वनि आयी। थोड़ी दूर जाने पर उन्होंने एक दृश्य देखा, जिसे देखते ही उन्हें भय हुआ और आश्चर्य भी। पानी के किनारे जो एक बहुत बड़ा वृक्ष था, उसकी टहनियों में लटक रहे थे, एक भेड़ा और एक बौना आदमी।

यह देखते ही सिद्धसाधक ने शूल उठाया और कहा, "इन दोनों को जकड़ रखा है, किसी अदृश्य भूत ने। अपने शूल को उस भूत के दिल के आर-पार कर दूँगा।" यों कहते हुए वह शूल फेंकने ही वाला था कि पेड़ की एक टहनी ने झुककर उसका कंधा पकड़ लिया।

सिद्धसाधक छलांग मारकर उस वृक्ष से थोड़ी दूर आ गया और कहा, "सावधान जयशील,

जिसने इन दोनों को बांध रखा है, वह भूत नहीं, कोई राक्षस है।"

जयशील बिना कुछ कहे वृक्ष के पास आया और तलवार से वृक्ष की शाखा काट दी। बौना और भेड़ा दोनों नदी में जा गिरे।

बौना थरथर काँपता हुआ पानी से बाहर आया और दोनों को ध्यान से देखने के बाद नम्र स्वर में कहा, "महाशयो, आपने इस सेनाधिपति को मनुष्यों को खा जानेवाले वृक्ष से बचाया। बहुत धन्यवाद। हमारी महारानी आपको अवश्य इनाम देंगी।

उसकी बातें पूरी हों, इसके पहले ही पेड़ों के पीछे से आवाज़ें आने लगीं। उन्होंने दूसरे ही क्षण देखा कि रथ पर एक स्त्री बैठकर आ रही है। उसने हिरण चर्म तथा बगुला व मोर के पंखों को

मिलाकर सिया हुआ मुकुट पहन रखा था। उस रथ में जुते थे, दो पहाड़ी भेड़ें। उस रथ के पीछे और उसके दोनों ओर भेड़ों पर बैठे थे हाथों में भाले लिये कितने ही बौने।

उन्हें देखते ही बौना सेनाधिपति आगे बढ़ा और बोला, ''महारानी!'' फिर उसने बौनी स्त्री को झुककर प्रणाम किया और जयशील व सिद्धसाधक से परिचय कराते हुए कहा, ''इन दोनों ने मुझे इस जीवभक्षक वृक्ष से बचाया।''

बौनी रानी ने कहा, ''बहुत अच्छा।'' फिर उन दोनों की ओर मुड़कर उसने कहा, ''शूरो, वीरो, कल रात मैंने तुम दोनों को सपने में देखा था। तुम दोनों ने प्रतिज्ञा की थी कि तुम मागडेकारि के शत्रुओं का संहार करोगे। और हमें शाश्वत रक्षा प्रदान करोगे। आप ही वे दोनों हैं न?''

''यह रानी बड़ी चालाक लगती है। जयशील, हमें सावधान रहना होगा,'' साधक ने धीमे स्वर में जयशील से कहा।

''फिर भी, ये खतरे में हैं, इसलिए हमें भरसक इनकी सहायता करनी चाहिए।'' जयशील ने कहा। साधक ने इस पर अनिच्छापूर्वक सिर हिलाते हुए कहा, ''नहीं जयशील, हमें अपने लक्ष्य को भूलकर अपना अमूल्य समय इन कामों में नष्ट नहीं करना चाहिए।''

''साधक, कनकाक्ष राजा की संतान के प्राणों की तरह ही हैं इनके प्राण भी। सुनते हैं कि इन्हें किनसे खतरा है। मुझे लगता है कि इनकी यथासाध्य सहायता करना हमारा धर्म है,'' जयशील ने कहा।

इतने में पास ही के पहाड़ की चोटी से भय पैदा कर देनेवाला चीत्कार सुनायी पड़ा। सबने

उस तरफ़ मुड़कर देखा। दस-बारह फुट का एक ऊँचा विकृत आकार उस चोटी पर खड़ा था। उसके हाथ में एक बहुत बड़ा पत्थर था। उसकी कमर में एक जंजीर बंधी हुई थी। उस जंजीर को एक हाथ से पकड़कर अपने दूसरे हाथ में तलवार लिए एक मनुष्य वहाँ खड़ा था।

उस विकृत आकार को देखते ही बौनी रानी सहित उसके सभी अनुचर थरथर काँपने लगे। विकृत आकारवाले के बगल में जो खड़ा था, वह तलवार से उसकी पीठ को खरोंचने लगा। विकृत आकारवाला उस पत्थर को हाथ में पकड़कर इधर-उधर हिलाने-डुलाने लगा।

जयशील ने सिद्धसाधक से कहा, ''साधक, इस भयंकर जंतु को पालतू बनाकर खेलनेवाला खिलाड़ी कोई बौना नहीं, हमारी ही तरह का एक मानव है। वह किस प्रकार का जंतु होगा?'' फिर रानी की ओर मुड़कर उसने पूछा, ''महारानी, आपने अपने शत्रुओं की बात की थी। क्या वे दिखाई दे रहा जंतु और वह आदमी हैं, जो उसके साथ है?''

रानी थोड़ी संभल गयी। फिर रथ से उतरी और उन दोनों के सामने आकर बोली, ''महा योद्धाओ, हमारे शत्रु और कोई नहीं, पर्वत के उस पार रहनेवाले हमारी ही जाति के हैं। परंतु उनका दावा है कि वे यक्ष जाति के हैं, और हमसे उत्तम हैं। इस बात पर वे बहुत गर्व भी करते हैं। वे हमारा नाश करने पर तुले हुए हैं।

''उन्होंने तो ऐसे भयंकर जंतु को पालतू बना लिया। उनके लिए इसके होते हुए आपको हराना और अपने वश में कर लेना बहुत आसान है। पर वे ऐसा क्यों नहीं कर सके?'' जयशील ने अपना संदेह प्रकट किया।

''महाशयो, वह भयंकर जंतु नरवानर है। उससे जो पत्थर फेंकवा रहा है, वह आप जैसा मानव है। इन दोनों ने दस दिन पहले हमारे शत्रुओं से दोस्ती कर ली।'' बौनी रानी ने कहा।

रानी की बात ख़त्म हो, इसके पहले ही नरवानर ज़ोर से चिल्ला उठा और उस बड़े पत्थर को उसने बौनों पर गिरा दिया।

*(सशेष)*

# एक आदर्श पत्नी

होडजा नसीरुद्दीन अपने दोस्त के साथ कॉफी पी रहे थे कि उसी समय एक अन्य मित्र आया और बड़ी खुशी के साथ अभिवादन करता हुआ बोला, "अगले सप्ताह मेरी शादी हो रही है। और मैं बहुत खुश हूँ। लेकिन होडजा, आपने कभी शादी करने की बात क्यों नहीं सोची?"

"ओह ! सोची थी, सोची थी। लेकिन यह बहुत पहले की बात है।" होडजा ने जवाब दिया।

"क्यों? क्या हुआ? क्या कोई मिली नहीं?" उसके मित्र ने पूछा।

"नहीं, ऐसा नहीं था। जब मैं जवान था तब एक बार एक आदर्श बीवी की तलाश में घर से निकल पड़ा। पर्वतों और घाटियों को पार कर कितने ही मीलों की यात्रा की। अंत में एक पर्वत के पास एक छोटी सी जगह पर एक खूबसूरत स्त्री मिली। वह जितनी बुद्धिमती थी, उतनी ही उदार भी थी। लेकिन उसे दुनियादारी का ज्ञान न था। मैंने सोचा कि रोजमर्रे के कामों में वह मेरी मदद नहीं कर पायेगी, इसलिए मैंने उससे शादी नहीं की। अपनी यात्रा मैंने जारी रखी और मैं एक बड़े शहर में पहुँचा। वहाँ मेरी मुलाकात सचमुच एक सुंदर स्त्री से हुई। वह बुद्धिमती और दयालु थी और दुनियादारी के कामों में भी चतुर थी। वह लगभग पूर्ण लगती थी।"

"फिर क्या हो गया? उससे शादी क्यों नहीं कर ली?" उसके दोनों दोस्तों ने पूछा।

"वह हमलोगों की बोली नहीं समझ पाती थी और मैं उससे बातचीत नहीं कर सकता था।" होडजा ने कहा। "इसलिए मैंने सोचा कि उस स्त्री से शादी करने से क्या लाभ जिससे हम बातचीत न कर सकें। इसलिए मैंने और दूर-दूर तक यात्रा की और मिस्र जा पहुँचा। मैंने वहाँ उसे देखा। वह हर तरह से परिपूर्ण थी। वह सुंदर और सदय थी। वह सांसारिक और व्यावहारिक थी और आध्यात्मिक ज्ञान में भी पूर्ण थी। वह हमारी भाषा जानती थी। उससे बात करने में मुझे बहुत आनन्द आया। मैं तुरंत समझ गया कि मुझे एक आदर्श पत्नी मिल गई।
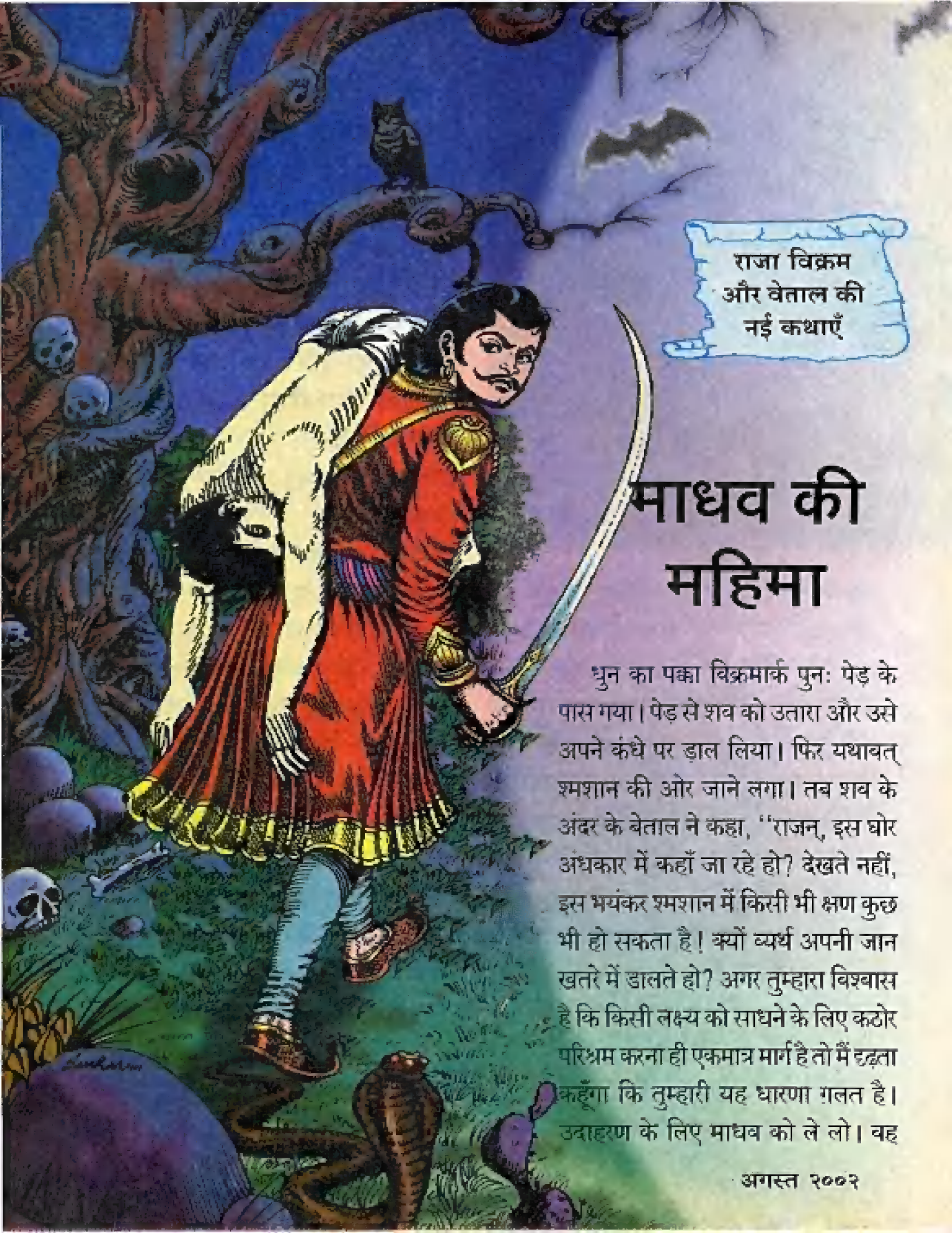
"ओह होडजा !" उसके दोस्तों ने कहा। "ऐसे मूर्तिमान आदर्श को क्यों हाथ से जाने दिया? उससे शादी क्यों नहीं कर ली?"

"आह !" होडजा ने उदास होकर सिर हिलाते हुए कहा। "काश ! मैं कर पाता। वह एक आदर्श पति की तलाश कर रही थी।"

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

# माधव की महिमा

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, इस घोर अंधकार में कहाँ जा रहे हो? देखते नहीं, इस भयंकर श्मशान में किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है! क्यों व्यर्थ अपनी जान खतरे में डालते हो? अगर तुम्हारा विश्वास है कि किसी लक्ष्य को साधने के लिए कठोर परिश्रम करना ही एकमात्र मार्ग है तो मैं दृढ़ता कहूँगा कि तुम्हारी यह धारणा गलत है। उदाहरण के लिए माधव को ले लो। वह

एक सामान्य गृहस्थ था। न ही उसने कष्ट झेले और न ही उसे भगवान से वर मिला। पर उसने महिमाएँ प्रदर्शित कीं और अनेक चमत्कार किये। पर ऐसे महिमावान व शक्तिशाली माधव को भी मंत्री ने दुत्कारा। उसे अज्ञानी कहा। उन दोनों की कहानी मुझसे सुनो और अपने को सुधारो।'' फिर बेताल उन दोनों की कहानी यों सुनाने लगा :

माधव एक साधारण गृहस्थ था। गाँव में उसका अच्छा नाम था। उसकी पत्नी भी अच्छे स्वभाव की थी। उनका एक बेटा और एक बेटी थी। उसका परिवारिक जीवन आराम से गुज़र रहा था।

एक दिन माधव सपरिवार राजधानी देखने निकला। उन्हें वहाँ पहुँचने के लिए एक छोटे-से जंगल से गुज़रना था। जब वे चारों जंगल से होकर जा रहे थे तब दो चीतों ने उन पर आक्रमण कर दिया। माधव ने बड़ी मुश्किल से किसी तरह अपने को बचा लिया पर उसकी पत्नी और दोनों बच्चों को चीतों ने मार डाला।

इस आकस्मिक घटना ने माधव को बहुत दुखी कर दिया। पर वह कर भी क्या सकता था! वह वापस गाँव चला गया। घर व जायदाद बेच डाले और एक दूसरे गाँव में बस जाने के लिए निकल पड़ा। उस गाँव में सुदर्शन नामक उसका दूर का एक रिश्तेदार रहता था। उसने माधव को अपने घर में आश्रय दिया। इसका एक कारण उसका स्वार्थ था।

सुदर्शन व्यवहार-कुशल था। वह समझता था कि माधव के पास बड़ी धन-राशि है और उसे सहानुभूति दिखाकर वह धन हड़प लेना चाहता था। उसने योजना भी बना ली कि धन हाथ में आ जाए तो उसे कैसे घर से निकालूँ।

पर देखते-देखते कुछ ही दिनों में माधव उस गाँव के लोगों का प्रिय पात्र बन गया।

उन दिनों भीम नामक एक ग्रामीण के घर में चोरी हो गयी। चोर सारे रुपये चोरी करके ले गया। उसी गाँव के एक सूदखोर को उसे कुछ रुपये देने थे। उसने धमकी भी दी कि कर्ज न चुकाने पर तुम्हारे घर की नीलामी करवा दूँगा। माधव से उसने अपना दुखड़ा सुनाया।

''उस कर्ज़ के विषय में मैं अवश्य ही तुम्हारी मदद करूँगा। पर जिसने तुम्हारे यहाँ चोरी की और तुम्हारी मेहनत का फल लूटा, वह बहुत दुख

झेलेगा, उसका भला नहीं होगा। जिन हाथों से उसने चोरी की, वे हाथ टूट जायेंगे। जिस धन को उसने चुराया, वह धन उसकी अंत्येष्टि क्रिया के ही उपयोग में आयेगा।'' फिर माधव ने उसे आवश्यक धन देकर भेज दिया।

इसके बाद एक विचित्र घटना घटी। भीम के यहाँ जिसने चोरी की, वह कोई और नहीं बल्कि उसका पड़ोसी नारायण ही था। वह उस रात को जब अपने बैलों को चारा खिला रहा था तब एक बैल ने सींग मारकर उसे घायल कर दिया। साथ ही उसके दोनों हाथ भी टूट गये। वह जब पट्टी बंधवाने निकलने ही वाला था कि किसी दूसरे काम पर आये सुदर्शन ने यह देख लिया। उसने कहा, ''नारायण, हमारे माधव ने शाप दिया था कि भीम के घर में जिसने चोरी की, उसके हाथ टूट जायेंगे। उसकी वाणी में अद्भुत शक्ति है। तुम्हारे टूटे हुए हाथों को देखकर मुझे विश्वास होने लगा है कि भीम के घर में तुम्हीं ने चोरी की।''

नारायण एकदम घबरा गया। उसने तुरंत अपने अपराध को स्वीकार कर लिया और भीम को रुपये सौंप दिये। वह दौड़ा-दौड़ा माधव के पास गया और शाप वापस ले लेने के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

''क्या कहा? मैंने तुम्हें शाप दिया? भीम की दुस्थिति को देखकर मैं नाराज़ हो उठा और जो मुँह में आया, बक गया। अच्छा हुआ, मेरे कहे बिना ही तुमने अपनी ग़लती मान ली। फ़िक्र मत करना। तुम्हारे हाथ की हड्डियाँ नहीं टूटेंगी और

दो दिनों के अंदर तुम ठीक हो जाओगे।'' माधव ने सहानुभूति प्रकट करते हुए उसे सांत्वना दी।

आश्चर्य की बात है, दो ही दिनों के अंदर नारायण के घाव भर गये।

सुदर्शन ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और गाँव भर में प्रचार करने लगा कि माधव की वाणी में अमोघ शक्ति है और माधव के मुँह से शुभ वाणी निकले, इसके लिए और अशुभ वाणी न निकले इसके लिए भी गाँव के लोगों से वह पैसे ऐंठने लगा।

माधव के यहाँ हर रोज़ लोगों की भीड़ लग जाती थी। थोड़े ही दिनों के बाद इसका कारण माधव को मालूम हो गया। उसके नाम पर सुदर्शन लोगों को धोखा दे रहा है और अपना उल्लू सीधा कर रहा है, यह भी उसे मालूम हो गया। सुदर्शन के इस दुर्व्यवहार से उसे घृणा

होने लगी। जब यह घृणा हद पार कर गयी तब किसी को बताये बिना आधी रात को वह घर छोड़कर चला गया।

माधव स्वयं नहीं जानता था कि उसे कहाँ जाना है, कहाँ पहुँचना है। वह मन ही मन सोचने लगा कि अगर कोई आदमी मुझे अपने घर ले जाए और स्वादिष्ट भोजन खिलाये तो कितना अच्छा होगा। ठीक उसी समय एक घोड़ा-गाड़ी आकर वहाँ रुक गयी। उस गाड़ी में बैठे धनवान ने माधव को अपनी गाड़ी में बिठाया और अपने घर में उसे स्वादिष्ट खाना खिलाया। उसने धनवान को अपनी सारी कहानी बतायी।

धनवान चकित रह गया और बोला, "मुझे भी लगता है कि आपमें बहुत महिमाएँ हैं। शायद भगवान ने ही मुझे आपसे मिलाया। पंद्रह साल का मेरा बेटा इधर चार सालों से रोगग्रस्त है। अपने मनोसंकल्प से उसे चंगा कर दीजिए।"

अब माधव को अपनी शक्तियों पर विश्वास होने लगा। उसने धनवान के बेटे के शरीर पर अपने हाथ रखे और कहा, "पंद्रह दिनों के अंदर ही सब बच्चों की तरह तुम बोलने लगोगे और चलने फिरने लगोगे।"

इस घटना के चार दिनों के बाद नगर से एक वैद्य आया। उसने धनवान से मिलकर कहा, "आपके बेटे की बीमारी के बारे में मैंने सुन रखा है। मेरे पास इसकी चिकित्सा के लिए आवश्यक औषधि है। दस दिनों के अंदर मैं उसे बिल्कुल ठीक कर दूँगा।"

वैद्य का कहा सच निकला। वह बालक एकदम ठीक हो गया। तब से माधव की शोहरत

और बढ़ गयी। सबको पक्का विश्वास हो गया कि उसकी वाणी अचूक है।

माधव इन्हीं दिनों एक दिन नदी तट पर गया। वहाँ एक ग़रीब औरत कपड़े धो रही थी। दस साल का उसका बेटा इधर-उधर पत्थर फेंकता हुआ खेल रहा था। उनमें से एक पत्थर माधव के सिर पर गिरा। दर्द के मारे माधव ज़ोर से चिल्ला पड़ा। डर के मारे वह लड़का नदी में कूद पड़ा। उसकी माँ को मालूम था कि उसके बेटे को तैरना नहीं आता। वह माधव के पास आकर गिड़गिड़ाने लगी, ''माधव आपके शाप की वजह से मेरा बेटा नदी में गिर गया। आप ही उसे डूबने से बचा सकते है।''

माधव ने उस औरत को ढाढ़स बंधाते हुए कह, ''डरो मत। तुम्हारा बेटा तैरता हुआ किनारे आ जायेगा।''

माधव ने अपनी बातें पूरी भी नहीं कीं कि इतने में वह लड़का तैरता हुआ किनारे आ गया।

ठीक उसी समय उस देश का राजा बहुरूपिया बनकर देश में घूम-फिर रहा था। वहाँ जो भी हुआ, उसने खुद देखा और सुना। राजधानी पहुँचते ही उसने माधव को अपने यहाँ बुलाया और मंत्री से उसका परिचय कराया।

इसके बारद राजा ने माधव की शक्तियों, महिमाओं, चमत्कारों के बारे में मंत्री को बताया और कहा, ''इसकी वाणी की शक्ति के आधार पर दरबार के सभी सदस्यों को समर्थ बनाना चाहता हूँ। शत्रु राजाओं पर विजय पाने की इच्छा
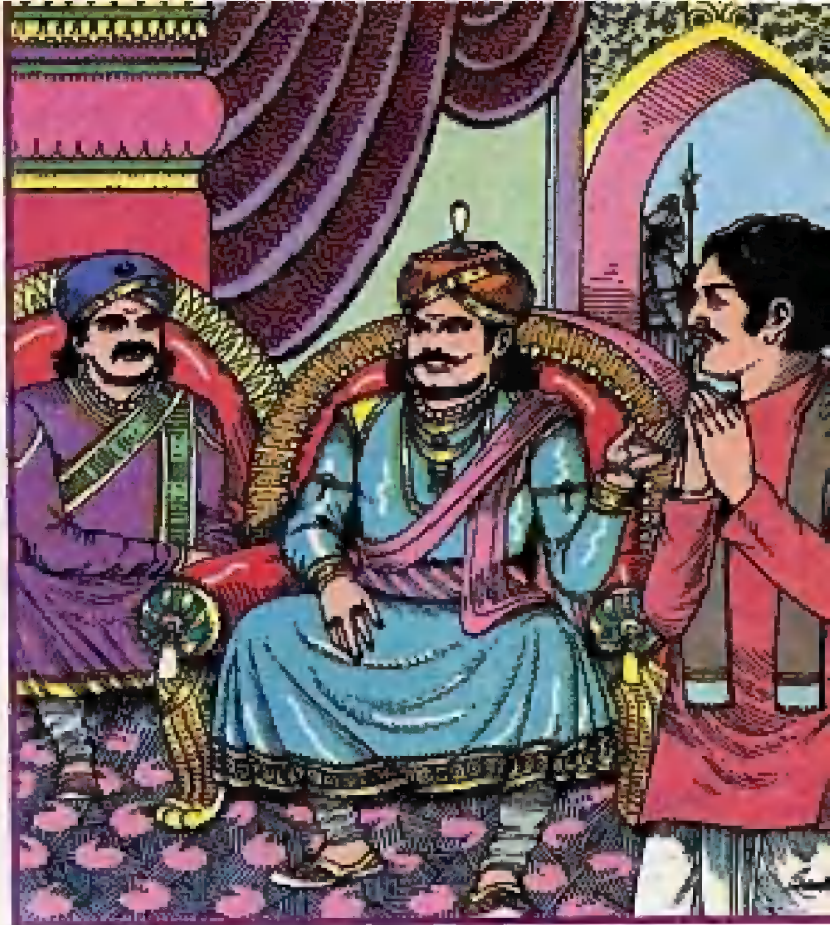
रखता हूँ। आपकी क्या सलाह है?''

मंत्री ने तब उत्तर दिया, ''माधव ने अपनी महिमा से कोई नयी विशिष्टता नहीं जोड़ी। भीम के प्रति हुए अन्याय को देखकर सहानुभूति दिखाते हुए उसने कहा था कि चोर के हाथ टूट जाएँ। संयोगवश चोर को बैल ने घायल कर दिया। भूखा व्यक्ति चाह रहा था कि उसे कोई स्वादिष्ट भोजन खिलाये। संयोगवश एक धनवान वहाँ आया और उसे अपने यहाँ ले जाकर स्वादिष्ट भोजन खिलाया। वह चाहता था कि रोगग्रस्त बालक ठीक हो जाए। संयोगवश ठीक समय पर वैद्य आया और अपनी औषधि से बालक को चंगा कर दिया। इसी तरह जो भी हुआ संयोगवश हुआ।''

राजा ने मंत्री की बातों पर खूब विचार किया और कहा, ''माधव की सेवाओं को हम उपयोग

में लायें और उनसे हमें लाभ पहुँचे तो ठीक है। अगर हमें लाभ नहीं भी पहुँचे तो इससे हमें कोई नुकसान तो नहीं होगा न?''

मंत्री ने कहा, ''महाप्रभु, माधव की बातों से हमें कोई लाभ नहीं होगा तो हमारी जगहँसाई होगी। क्योंकि मूढ़ विश्वास अविवेकियों के लक्षण हैं। आपने गाँव में उससे संबंधित सारे विवरण इकट्ठे किये। अगर माधव समझता हो कि मुझमें महिमाएँ भरी पड़ी हैं, तो उससे बढ़कर मूर्ख और अज्ञानी कोई नहीं होगा। आप तो जानते ही होंगे कि उसका परिवार किस विपत्ति से गुज़रा?''

मंत्री के उत्तर से चकित राजा ने कहा, ''अच्छा हुआ, आपने सही समय पर याद दिलाया।'' कहते हुए उसने मंत्री की समझ-बूझ की भरपूर प्रशंसा की। फिर माधव को बुलवाया और उसका सम्मान करके उसे गाँव भेज दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से पूछा, ''राजन्, माधव में महिमाएँ हैं या नहीं, मैं नहीं कह सकता, पर यह सच है कि उसकी वाणी में शक्ति है। अनेक घटनाओं से यह साबित भी हो चुका है। क्या तुम समझते हो कि ये सब केवल संयोगवश हुए हैं, इत्तिफ़ाक से हुए हैं? माधव नेक आदमी है। वह किसी की बुराई नहीं चाहता, नहीं करता। पर ऐसे भले आदमी को मंत्री ने अज्ञानी क्यों कह दिया? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

राजा विक्रमार्क ने कहा, ''माधव अपनी पत्नी व अपने बच्चों को बहुत चाहता था। चीतों ने उन्हें मार डाला। पर वह उन्हें बचा नहीं पाया। इसका यह मतलब हुआ कि उसमें महिमाएँ नहीं हैं। अगर होतीं तो उन्हें मरने से वह बचा लिया होता। मंत्री ने अपनी तार्किक बुद्धि से इस तथ्य की पुष्टि की। हेतुबद्ध इस तर्क से राजा को अपनी ग़लती समझ में आ गयी। इसीलिए उसने माधव को अपने दरबार में नियुक्त नहीं किया और उसका सत्कार मात्र करके गाँव भेज दिया।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

*(आधार - कस्तूरी की रचना)*

## भारत की पौराणिक कथाएँ - ४

# राजकुमारी के लिए चुनौती

अरण्य से चतुर्दिक घिरे सरोवर पर बसन्त ऋतु की शान्त सन्ध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। राजा सर्याति और उसकी रानी सरोवर के किनारे शीतल पवन और पुष्पों की सुगन्ध का आनन्द ले रहे थे। उनकी युवा पुत्री राजकुमारी सुकन्या आनन्द भाव में डूबी तितली की तरह थिरक रही थी। पर्यावरण परिवर्तन के लिए उसे कभी-कभी ही वन की ओर आने का अवसर मिल पाता था। वह इधर-उधर भागती हुई अपनी दासियों से बिछड़ गई तथा हिरणों-मयूरों के साथ दौड़ने लगी।

और ऊँचे-ऊँचे वृक्षों तथा छोटे जलप्रपातों के सौन्दर्य को निहारते हुए वन के अंतरंग भाग में पहुँच गई। "राजकुमारी! किधर हो?" दासियाँ राजकुमारी को पुकारती हुई ढूँढ रही थीं। अन्धकार फैलने लगा था। अब उसे माता-पिता के पास लौट जाना चाहिये। वह सरोवर की ओर आने के लिए वापस मुड़ी।

अचानक उसने कुछ असाधारण-सी चीज देखी और उस पर मुग्ध हो गई। एक वल्मीक में वे चमकते हुए दो रत्न थे। राजकुमारी ने एक झाड़ी से एक काँटा तोड़ा और उन दो चमकती चीजों को उससे यह जानने के लिए कुरेदा कि ये क्या हैं।

अगले क्षण उसे एक चीख सुनाई पडी। वह समझ नहीं सकी कि वह चीख कहाँ से आई। वह डर गई। वह सरोवर की ओर दौड़ी। सरोवर की दूसरी ओर राजा के अंगरक्षकों में एक विचित्र प्रकार के रोग के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। वे बिलकुल हिलडुल नहीं सकते थे। दूरदर्शी राजा ने शीघ्र ही भाँप लिया कि यह किसी के शाप के कारण हुआ है। शाप देनेवाला कौन हो सकता है? और इसका प्रभाव इन लोगों पर क्यों पड़ा?

राजा ने कारण का पता लगाया। वल्मीक तक पहुँचने से पूर्व ही उसने एक घोर यंत्रणा भरी एक कराह सुनी। उसने समझ लिया कि इसके अन्दर

प्रायश्चित राजकुमारी को करना होगा। उसे वृद्ध ऋषि के साथ वन में रहना होगा जिसे उसने अन्धा बना दिया था। ऋषि को एक पत्नी की प्यारयुक्त देख-रेख की आवश्यकता थी।

राजा और रानी किंकर्त्तव्यविमूढ़ थे। वे कैसे अपनी प्यारी बेटी को, जिसे किसी योग्य और सुन्दर राजकुमार के साथ विवाहित होना चाहिये, एक वृद्ध को सौंप दे भले ही वह एक महान ऋषि क्यों न हो ! लेकिन राजकुमारी ने यह बात मान ली। ''पिताश्री! मुझे एकान्त अच्छा लगता है। आश्रम के एकान्तवासी जीवन जीने की मेरी गुप्त लालसा भी रही है। भाग्य ने मेरी इस अभीप्सा की पूर्ति के लिए अब एक अनिवार्य परिस्थिति उत्पन्न कर दी है। कृपया ऋषि से विवाह कर उनकी सेवा करने की स्वीकृति प्रदान करें।'' उसने कहा।

इस बीच शाप का प्रभाव बढ़ता चला जा रहा था। राजा और रानी के सामने अपनी बेटी की बात मानने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं था। सुकन्या का ऋषि के साथ विवाह हो गया। उसने खुशी से अपने विलासी जीवन का त्याग कर दिया जो वह महल में बिता रही थी जहाँ उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए दर्जनों दासियाँ हमेशा तैनात रहती थीं। अब वह ऋषि के साथ अकेली रहती थी और उनकी सेवा करते कभी नहीं थकती थी।

एक दिन जैसे ही राजकुमारी सरोवर में स्नान कर बाहर निकली कि उसकी भेंट दो देवकुमारों से हो गई। वे दोनों हमशक्ल थे। उन्होंने राजकुमारी का अभिवादन किया। राजकुमारी ने भी उनके शिष्टाचार का प्रत्युत्तर दिया।

कोई तपस्वी है। ऋषि जब गहरी समाधि में चले गये तब चींटियों ने उनके चारों ओर बल्मीक बना ली।

राजा और उसके आदमियों ने सावधानी से ऋषि के शरीर पर पड़ी मिट्टी का ढेर हटाया। राजकुमारी ने जिन्हें अज्ञानवश कुरेदा था, वे ऋषि की आँखें थीं। वे समाधि से अभी-अभी जगे थे और आँखें खोलीं ही थीं कि राजकुमारी से अपराध हो गया। आह! ऋषि के शाप से ही राजा के आदमियों में विचित्र रोग फैल गया था।

वे एक विख्यात ऋषि थे। नाम था च्यवन। राजा और रानी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और शाप से मुक्ति के लिए प्रार्थना की। ऋषि ने, जो दृष्टिहीन हो गये थे, कहा कि अपराधी द्वारा यथेष्ट पायश्चित करने पर शाप अपने आप समाप्त हो जायेगा।

राजा ने ऋषि को महल में आराम से रखने का प्रस्ताव रखा लेकिन ऋषि सहमत नहीं हुए।

'ओ सुन्दरी ! हमें तुम्हें वृद्ध व्यक्ति के साथ अपना जीवन व्यर्थ नष्ट करते देख कर बहुत दुख होता है। हम जुड़वां भाई हैं और हम दोनों का नाम अश्विनी कुमार है। हम देवताओं के चिकित्सक हैं। हम दोनों तुम्हारे अधिकार में हैं। हम दोनों में से किसी एक को अपना पति बना सकती हो। तुम सुखी रहोगी।'' अश्विनी कुमारों ने कहा।

राजकुमारी को क्रोध आ गया। उसने उन्हें शाप देने की धमकी दी। अश्विनी कुमारों ने अपने अशिष्ट आचरण के लिए क्षमा माँगी। ''हम लोग तुम्हारे पति को अपने रहस्यमय रसायन से एक आकर्षक युवक में रूपान्तरित कर देंगे। उसके नेत्र की ज्योति भी वापस आ जायेगी। उसे हम लोगों के साथ सरोवर में सिर्फ एक डुबकी लगानी है। लेकिन पानी से बाहर आने पर तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी। क्या तुम तैयार हो?'' देवकुमारों ने कहा।

यद्यपि सुकन्या बड़ी सत्यनिष्ठा से पति की सेवा कर रही थी, फिर भी उनकी नेत्रहीनता के स्वयं जिम्मेवार होने के कारण वह बहुत दुखी रहती थी। इसलिए अश्विनी कुमारों के प्रस्ताव को वह मान लेना चाहती थी। लेकिन सब कुछ उसके पति पर निर्भर करता था। उसने च्यवन ऋषि को यह बात बताई। न तो सुकन्या को और न ऋषि को मालूम था कि अश्विनी कुमार कैसी परीक्षा लेनेवाले हैं। ऋषि ने अश्विनीकुमारों के प्रस्ताव को मान लेने की स्वीकृति दे दी।

देवकुमारों के साथ ऋषि ने सरोवर में प्रवेश किया। ''जल से बाहर आने पर तुम्हें अपने पति को हाथ पकड़ कर ले जाना होगा।'' अश्विनी कुमारों ने राजकुमारी से कहा।

तीनों ने एक साथ सरोवर में डुबकी लगाई। जब वे तीनों जल से बाहर निकले, वे हूबहू एक जैसे दिखाई पड़े। किसी मनुष्य के लिए यह जान पाना असंभव था कि उन तीनों में ऋषि कौन हैं।

लेकिन राजकुमारी सुकन्या साधारण नारी नहीं थी। वह अश्विनी कुमारों की चालाकी समझ गई। उसने आँखें बन्द कीं और भगवती माता का ध्यान कर तीनों में से एक को स्पर्श किया। वही उसके पति ऋषि च्यवन थे।

सुकन्या और ऋषिने दोनों आध्यात्मिक साधना करते हुए दीर्घ काल तक सुखपूर्वक अपना जीवन बिताया।

*- बिन्दुसार*
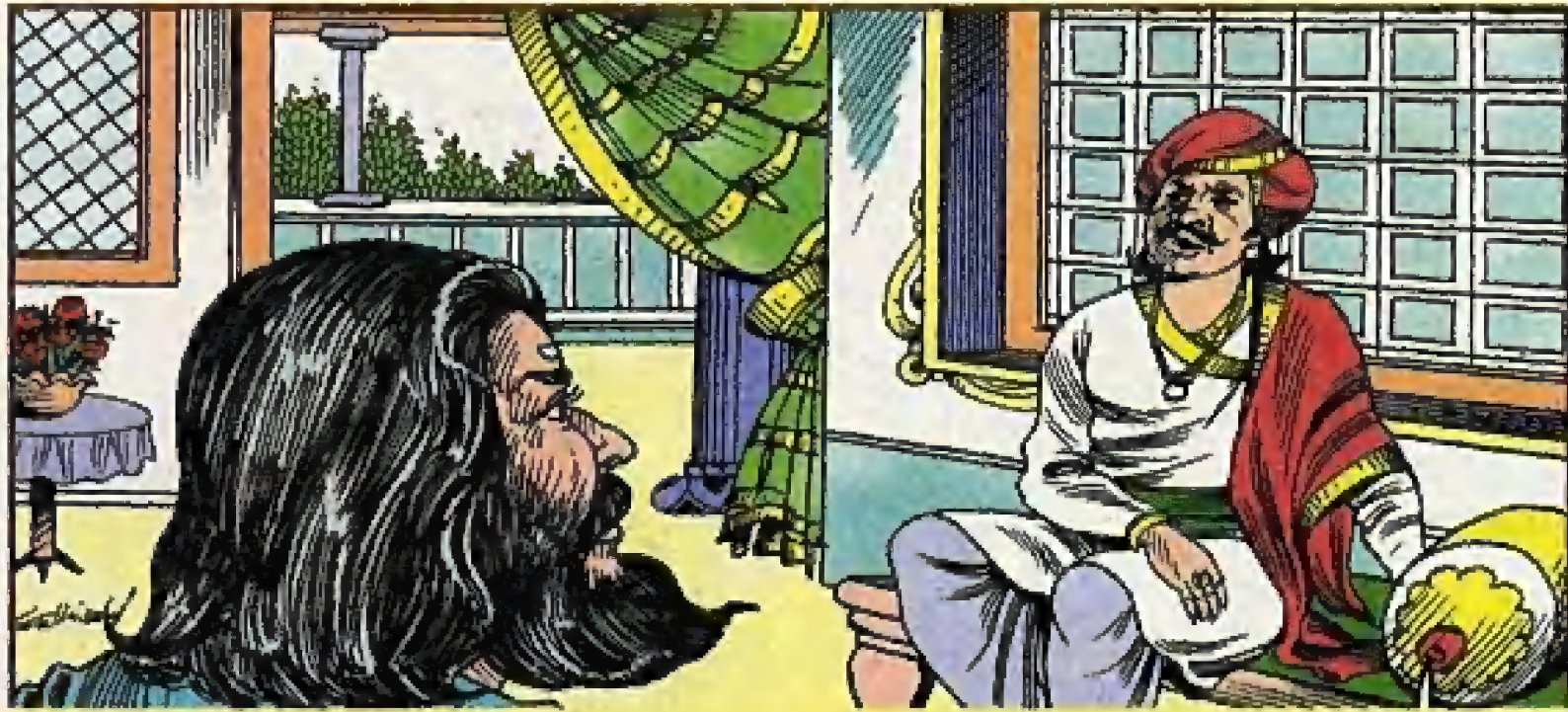
# मुस्कान – सच्चा सौंदर्य

सिरिपुर में श्रीधर नामक एक भाग्यवान था। उसके पास इतनी संपत्ति थी कि वह पीढ़ी दर पीढ़ी तक आराम से बैठकर खा-पी सकता था। परंतु एक चिंता उसे खाये जा रही थी। वह देखने में बड़ा ही विकृत लगता था।

अपना रूप सुंदर बने, इसके लिए उसने तरह-तरह की जड़ी-बूटियाँ खायीं। उसने मंदिरों में जाकर पूजाएँ भी कीं, पर उसपर भगवान की कृपा नहीं हुई।

जब श्रीधर ने अपनी समस्या बैरागी से बतायी तो उसने कहा, "पुत्र, भगवान ने ही तुम्हें यह रूप दिया है। इसे बदलने का हठ मत करो। भगवान की कृपा से तुम्हारे पास अपार संपत्ति है। सही ढंग से उसे उपयोग में लाओ। गरीबों को दान दो। ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी करो। ऐसा करने पर तुम सब लोगों को सुंदर दिखाई दोगे।"

श्रीधर को किसी और के लिए धन खर्च करना क़तई पसंद नहीं था। इसलिए वह कोई और उपाय बताने के लिए गिड़गिड़ाने लगा। बैरागी ने सोच-विचार के बाद कहा, "हरिपुर में माधव नामक एक युवक है। वह तुमसे भी ज्यादा कुरूप है। उसके साथ कुछ दिनों तक रहोगे तो तुम्हें अपनी सूरत सुंदर लगने लगेगी। चाहे कोई भी लक़ीर कितनी भी बड़ी क्यों न हो बग़ल में उससे बड़ी लक़ीर खिंची जाए तो वह छोटी-ही लगेगी न?"

श्रीधर को यह सलाह अच्छी लगी। छोटी-

सी रक़म लेकर वह हरिपुर गया और माधव से मिला। माधव का रूप सचमुच भद्दा और बेडौल था। पर उसे देखते ही श्रीधर मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने तुरंत उसे अपने घर आ जाने की सलाह दी।

माधव ग़रीब था। दिन भर मज़दूरी करने के बाद उसे जो मेहनताना मिलता था, उससे उसका पेट नहीं भरता था। इसीलिए श्रीधर ने माधव से कहा कि मेरे यहाँ आ जाओगे तो वहाँ आराम से बैठकर खा-पी सकते हो। परन्तु उसने श्रीधर के यहाँ आने से साफ़-साफ़ इनकार कर दिया।

उसने श्रीधर से कहा, ''गाँव के सब लोग मुझे बहुत चाहते हैं। यहाँ मैं बहुत खुश हूँ। इस गाँव को छोड़ने का सवाल ही नहीं उठता।''

श्रीधर माधव से अपनी तुलना करने लगा। सोचने लगा, अपार धन-संपत्ति के होते हुए भी मैं असंतुष्ट हूँ और यह निर्धन होकर भी संतुष्ट है।

फिर कहता है, गाँव के लोग मुझे बहुत चाहते हैं। भला एक निर्धन को लोग कैसे चाहेंगे? उसे उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। अपने संदेह की निवृत्ति के लिए उसने गाँव के लोगों से माधव के बारे में पूछताछ की।

कुछ लोगों ने कहा कि वह परोपकारी है। कुछ लोगों ने उसे अच्छा आदमी बताया। किसी ने भी यह नहीं कहा कि वह कुरूप है। एक ने कहा, ''जब भी उसे देखता हूँ, उसका

अच्छा स्वभाव ही मुझे याद आता है। उसके रूप की ओर तो मैं ध्यान ही नहीं देता।''

यह सच भी है। उसी गाँव की सुगुणा नामक एक दूध बेचनेवाली युवती माधव पर मरती है। कहती है कि शादी करूँगी तो माधव से ही करूँगी। उसे लेकर श्रीधर में दिलचस्पी जगी। वह सुगुणा को देखने गया। उसकी सुंदरता को देखकर उसने कहा, ''तुम अपूर्व सुंदरी हो। मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। मैं बहुत धनवान हूँ। यदि तुम मुझसे विवाह कर लो तो तुम्हें दूध बेचना नहीं पड़ेगा। आराम से जिन्दगी कट जायेगी।''

''मैं माधव को चाहती हूँ। शादी होगी तो उसी से होगी।'' सुगुणा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"माधव मुझसे अधिक सुंदर थोड़े ही है। मेरी तरह वह संपत्तिवान भी नहीं है। भला उसे इतना क्यों पसंद करती हो?" श्रीधर ने अपना असंतोष प्रकट करते हुए पूछा।

"मैं क्या जानूँ? पर जब देखो, उसके चेहरे पर मुस्कान फैली होती है। जानते हो, तब वह कितना सुंदर लगता है?" सुगुणा ने निधड़क कह दिया।

श्रीधर भी हँसना चाहता था। पर हँसी नहीं आयी। फिर से वह माधव से मिला और उससे हँसी सिखाने को कहा। तब माधव ने उसे सलाह दी, "एक काम करो। इस गाँव के कोने के आम के बगीचे में नित्यानंद स्वामी रहते हैं। उनके यहाँ चले जाओ। वे तुम्हें ऐसी कहानियाँ सुनायेंगे, जिन्हें सुनकर तुम हँसते ही रहोगे।"

श्रीधर नित्यानंद स्वामी से मिला। उनसे बतायी हास्य-भरी कहानियाँ सुनीं। वे कहानी बताये जा रहे थे और खुद हँसते भी जा रहे थे।

"कहानियाँ सुनाते हुए आप स्वयं खूब हँस रहे हैं। यह कैसे संभव है स्वामी?" श्रीधर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

नित्यानंद स्वामी ने हँसना रोक दिया और कहा, "मैं अपनी कहानियों पर हँस नहीं रहा हूँ। मेरी कहानियाँ सुनकर तुम्हारा पेट तो हिल रहा है, पर तुम्हारे चेहरे पर हँसी का कोई चिह्न नहीं है। यही देखकर मुझे हँसी आ गयी।" श्रीधर ने कहा, "सच पूछें तो मैं हँसा अवश्य। हँसने पर ही मेरा पेट हिला-डुला।"

"ऐसी बात है? हँसने के बाद भी तुम्हारे चेहरे में कोई फर्क क्यों नहीं आया? तुम्हारे मन के स्वार्थभरे विचार के कारण ही तुम्हारी हँसी दिखायी नहीं दे रही है। इसमें भला हम कर भी क्या सकते हैं?" नित्यानंद स्वामी ने गंभीर स्वर में सच्चाई बता दी।

अब सही बात श्रीधर को समझ में आयी। वह सिरिपुर लौटा। गाँव के लोगों की भलाई करने लगा। उनके सुख-दुख में भाग लेने लगा। तब से अपने कुरूप होने का उसे भी दुख नहीं हुआ।

# बताओ तो जानें

**देश के अतीत और वर्तमान को याद करने के लिए अगस्त उपयुक्त समय है । निम्नलिखित प्रश्न तुम्हारी जिज्ञासा को और बढ़ा सकते हैं?**

१. स्वतंत्र भारत का प्रथम बजट किसने प्रस्तुत किया?

२. भारत के कौन राष्ट्रपति सबसे कम समय तक रहे?

३. कब मतदान करने की आयु २१ वर्ष से घटा कर १८ वर्ष कर दी गई?

४. 'जय जवान, जय किसान' के नारे के साथ 'जय विज्ञान' किसने जोड़ा?

५. संसद में अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए सांसदों की अल्पतम आवश्यक संख्या कितनी होनी चाहिए?

६. राज्य सभा में सत्र की अध्यक्षता उपराष्ट्रपति करते हैं । उपराष्ट्रपति की अनुपस्थिति में यह कार्य कौन करता है?

७. क्षेत्रीय भाषा के आधार पर कौन सा पहला राज्य बना?

८. एक मलयालम भाषी क्षेत्र है जो केरल का भाग नहीं है । वह क्षेत्र कौन सा है और वह किस राज्य में है?

९. यदि गोमातेश्वर की एकाश्म प्रतिमा देखनी हो तो तुम किस राज्य का भ्रमण करोगे?

१०. केन्द्र-शासित राज्यों में सबसे छोटा राज्य कौन-सा है?

११. भारत का सबसे पहला कृषि विश्वविद्यालय कौन सा है?

१२. भारत के सबसे पुराने राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप का नाम क्या है?

१३. नेताजी सुभाष बोस ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों को नये नाम दिये थे। वे क्या हैं?

१४. बंगाल के बँटवारे के समय भारत का वायसराय कौन था?

*(उत्तर अगले महीने)*

## जुलाई प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. गोदावरी
२. शिमला
३. शिमला
४. वटवृक्ष
५. घास
६. रंगाई की शैली
७. जमशेदपुर
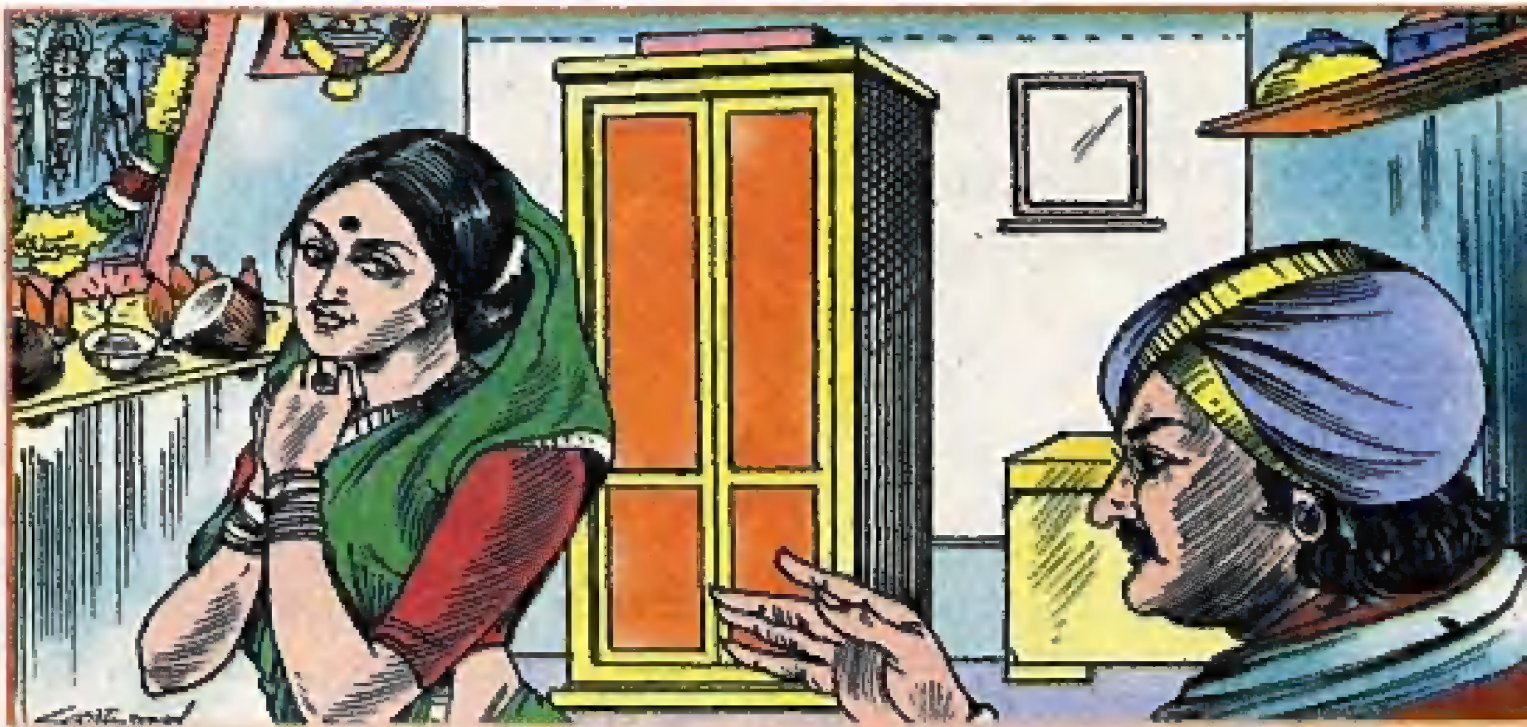
# मानव सेवा ही माधव सेवा है

राजवर नामक गाँव में लिंगेश्वर नामक एक वैद्य रहा करता था। किसी भी गुप्त रोग का वह निदान कर और उसके लिए सही दवा देकर रोगी की चिकित्सा कर देता था। बदले में, लोग जो देते थे, उसे लेकर संतृप्त हो जाता था।

परंतु उसकी पत्नी पार्वती को अपनी संतानहीनता पर बहुत दुख होता था। उसने एक दिन लिंगेश्वर से कहा, "आपका वैद्यशास्त्र मेरे विषय में क्यों इतना निष्ठुर है। मेरी यह जानने की बड़ी उत्कंठा है कि मैं माँ बनने के योग्य हूँ या नहीं। अंतर्वेद क्षेत्र जायेंगे। उस भगवान की पूजा करेंगे। एक रात वहाँ के संतान मंडप में गुजारेंगे। लोगों का कहना है कि वहाँ सपने में फल व पुष्प भगवान हमें दिखा दें तो हमें संतान अवश्य होगी।"

इसपर लिंगेश्वर ने थोड़ी देर तक सोचा और फिर कहा, "अंतर्वेद स्वामी स्वयं लक्ष्मीनरसिं हैं। हमारी संतान होगी या नहीं , यह हम नह जानते। पर भगवान के दर्शन करने से पुण्य त अवश्य मिलेगा। इसलिए तुम्हारे कहे अनुसार ह वहाँ अवश्य जायेंगे।"

लिंगेश्वर ने पत्नी की बात मान तो ली, प जब उसे मालूम हुआ कि अंतर्वेद क्षेत्र बहुत दूर तो वह दुविधा में पड़ गया। वहां पहुँचने के लि बहुत दूर तक पैदल जाना पड़ेगा। फिर उसके बाद नदी में नाव से यात्रा करनी होगी। इसके लिए बड़ी रकम की ज़रूरत पड़ेगी। अब तक इस पेशे में रहकर जो भी उसने कमाया, वह पूरा क पूरा खर्च हो जायेगा।

लिंगेश्वर ने यह सच्चाई अपनी पत्नी से बताय और कहा, "सोच समझकर निर्णय कर लो

उसके बाद जैसा तुम चाहोगी, वही करूँगा।''

पार्वती सोच में पड़ गयी। उसने आखिर अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, ''एक काम करते हैं। इस अंतर्वेद की यात्रा के पहले हम अपने घर में सत्यनारायण व्रत रखेंगे। गाँव के सब लोगों को निमंत्रण देंगे। भगवान की कृपा हो तो जो भी आयेंगे, उनमें से आपसे चिकित्सा करानेवाले थोड़ा-बहुत अवश्य देंगे।''

पत्नी के कहे अनुसार लिंगेश्वर ने सत्यनारायण व्रत का आयोजन किया और गाँव के सब लोगों को निमंत्रित किया। लोग जानते थे कि लिंगेश्वर धन की आशा नहीं रखता और इस व्रत के द्वारा धन कमाने का उसका कोई इरादा नहीं है। इसलिए बड़ी संख्या में लोग आये और उन्होंने लिंगेश्वर के प्रति उनमें जो आदर की भावना थी, दर्शायी।

लोगों ने दिल खोलकर भेंट के रूप में धन भी दिया। लिंगेश्वर ने सोचा, उसके पास जो रक़म है और लोगों ने उसे जो रक़म दी, उन दोनों से दो ग़रीब परिवारों के लिए अच्छी झोंपड़ियाँ बनायी जा सकती हैं।''

पार्वती ने इसपर कोई टिप्पणी नहीं की। दो दिनों से बूंदाबांदी हो रही थी पर उस दिन रात को बहुत बारिश हुई। तीन दिनों तक लगातार मूसलधार वर्षा होती रही। गाँव पानी से भर गया। चौथे दिन ही सूरज के दर्शन हुए।

लिंगेश्वर और पार्वती ने बाहर आकर देखा कि स्थिति बड़ी ही गंभीर है। मज़दूर लखन, उसकी पत्नी व उनकी संतान बिल्कुल भीग गये हैं और एक नीम के पेड़ के नीचे बैठे हुए हैं। लगातार तीन दिनों से हुई वर्षा के कारण उनकी झोंपड़ी गिर गयी थी।

लखन की बुरी हालत को देखकर लिंगेश्वर का दिल दया भाव से उमड़ पड़ा। उसने लखन को और उसके परिवार को अपने घर के अंदर बुलाया। उन्हें पहनने के लिए कपड़े दिये। पार्वती ने जल्दी-जल्दी खाना पकाया और उन्हें खिलाया। इन तीन दिनों में उनपर जो बीता वह जानकर वह बहुत दुखी हुई। बरबाद झोंपड़ी को फिर से खड़ी करना लखन के बस की बात नहीं थी।

पार्वती ने पति से कहा, ''लखन के बच्चों की हालत को देखते हुए मुझसे रहा नहीं जाता। संतान के लिए अंतर्वेद के लक्ष्मीनरसिंह स्वामी का मैं दर्शन करना चाहती थी। परन्तु दीन स्थिति में डूबे इन बच्चों की सहायता न करूँ और संतान की प्राप्ति के लिए वहाँ जाऊँ, यह भी कोई बात हुई ? मुझे तो अपनी इच्छा पर हँसी आने लगी है। संतान होगी, इस आशा से हम भगवान के दर्शन करने जाना चाहते हैं, पर हमारी यह आशा पूरी होगी या नहीं, कोई बता नहीं सकता। उससे तो अच्छा यही होगा कि हम लखन के लिए एक झोंपड़ी बनवा दें। धन का सदुपयोग भी होगा।''

पत्नी की बातों से लिंगेश्वर बहुत खुश हुआ। पास ही रहकर उसने लखन के लिए एक अच्छी झोंपड़ी बनवायी। गृहप्रवेश के अवसर पर लखन के परिवार ने लिंगेश्वर दंपति को सविनय प्रणाम किया और अपनी कृतज्ञता जतायी।

जिस दिन लखन ने नये घर में प्रवेश किया, उस दिन रात को पार्वती ने एक सपना देखा। उस सपने में उसने देखा कि एक दिव्य पुरुष उसे फल और फूल दे रहा है और कह रहा है ''अंतर्वेदी लक्ष्मी नरसिंह स्वामी के दर्शन से जो पुण्य मिलता है, उतना ही पुण्य मिलता है, साथी मानव को उसके कष्टों में यथाशक्ति सहायता पहुँचाने से। मानव की सेवा माधव सेवा है, इसीलिए ये फूल और फल तुम्हें दे रहा हूँ।''

जागने के बाद उसने अपने सपने के बारे में पति से बताया। एक साल ही के अंदर उनका एक पुत्र हुआ।

## जीवन एक यात्रा है!

तुम्हें पर्यटन से प्यार है। है न? किन्तु क्या जिन्दगी भर चलते रहने की कल्पना कर सकते हो? जम्मू और कश्मीर में हिमाच्छादित हिमालय पर्वत श्रेणियों के बीच गुजर नाम की एक जनजाति रहती है। ये आज भारत की कुछ खानाबदोश जनजातियों में से एक हैं।

ये भारवाही घोड़ों पर तम्बू, कम्बल और मक्का के आटे की बोरियाँ लादे प्रत्येक वर्ष सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा करते हैं। नवम्बर और मार्च के बीच गुजर और इनके झुण्ड जम्मू के रियासी, रजौरी और पूंच के पहाड़ी क्षेत्र में एकत्र होते हैं। अप्रैल के पूर्वार्द्ध में ये बेहक अथवा हिमालय की अधिक ऊँचाइयों पर के शाद्वलों में वापस चले जाते हैं जो इनके झुण्ड के लिए ग्रीष्म-आश्रय हैं। सितम्बर आते ही वे बेहक छोड़ देते हैं और अपने शरद ऋतु के आश्रय स्थल जम्मू चले आते हैं।

## जहाँ देवता पहरा देते हैं

तमिलनाडु में चेन्नई के निकट नारियल तथा ताल वृक्षों से घिरे समुद्र तटीय गाँव मीतांकुलम के निवासियों को अपने गाँव के मन्दिर में, जो भगवान शिव मुनियप्पास्वामी को निवेदित है, इतना विश्वास है कि उनके १३२ घरों में से किसी एक में भी दरवाजे नहीं हैं।

गाँववालों का दावा है कि उस गाँव में कभी चोरी नहीं हुई। उनका यह भी विश्वास है कि यदि कोई ग्रामीण दरवाजा लगाने की कोशिश करता है या ताल के छप्पर की जगह खपरैल छत डालता है तो उसे देवता का क्रोध झेलना पड़ेगा। गाँव के दो सौ साल पुराने मन्दिर में भी न दरवाजा है, न ढंग की छत।
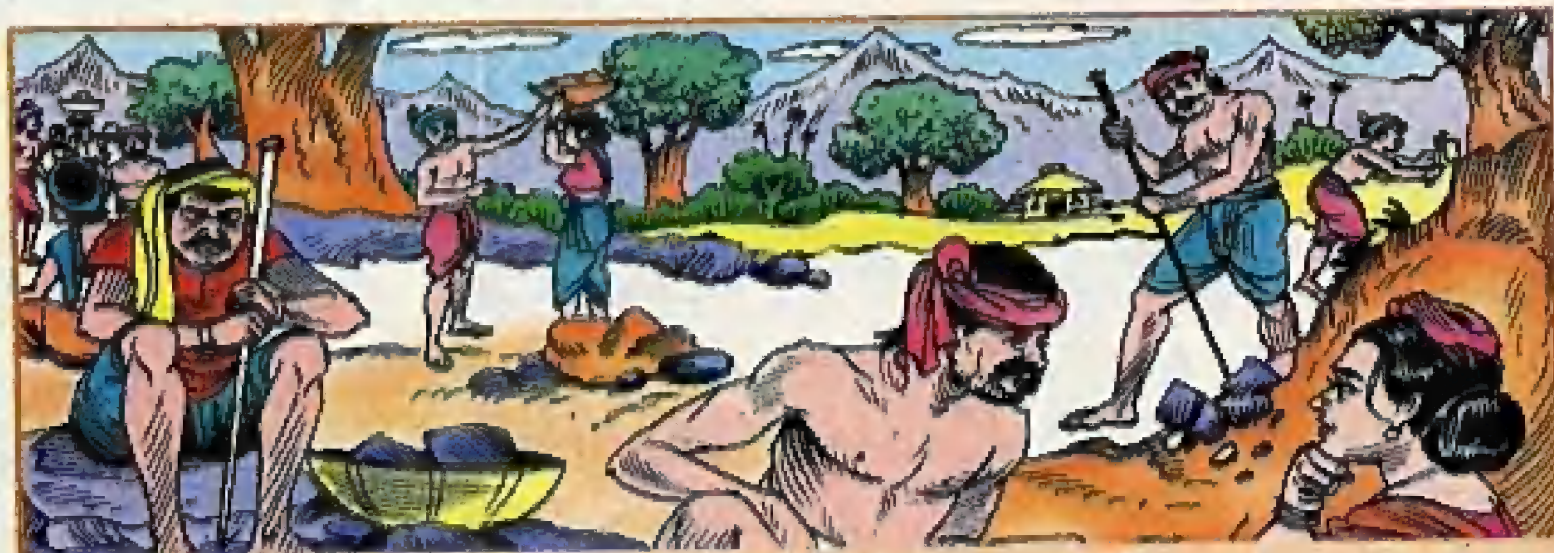
# तालाब की खुदाई

नारायण सीतापुर का ग्रामाधिकारी था। साल भर बारिश नहीं हुई, इसलिए गाँव अकाल ग्रस्त हो गया। नारायण ने निर्णय लिया कि भविष्य में ऐसे अकाल का सामना करने के लिए गाँव में एक बड़ा तालाब खोदा जाए। गाँव की ज़मीन में ही खोदने का काम शुरू कर दिया गया। इसके लिए राजा की अनुमति मिल गई और साथ-साथ आवश्यक निधियाँ भी। काम को जल्दी पूरा करने के उद्देश्य से उसने दो सौ मज़दूरों को इस काम पर लगा दिया।

तालाब खोदने का काम धीमी गति से चल रहा था। दो महीने गुज़र गये पर दो फुट का गड्ढा भी खोदा नहीं गया। इसी बीच भूषण नामक एक व्यक्ति उस गाँव में आया।

भूषण अमीर था। उसे जब मालूम हुआ कि अकाल के कारण बहुत लोग उस गाँव को छोड़कर जा रहे हैं तो वह उनके खेत सस्ते दाम में खरीदने लगा। देखते-देखते उसने गाँव के तीन-चौथाई खेत खरीद लिये। उसने भी अपने खेतों के बीच एक बड़ा तालाब खुदवाना चाहा। उसने चाहा कि परिमाण में वह ग्रामाधिकारी के तालाब से बड़ा हो। पर इसके लिए उसने एक सौ मज़दूरों को ही काम पर लगाया। एक महीने के अन्दर उन्होंने तालाब का बहुत बड़ा भाग खोद डाला। नारायण को जब यह मालूम हुआ तो वह चकित रह गया।

नारायण ने इसकी तहकिकात की कि ऐसा क्यों हुआ? मज़दूरों को वह भूषण से ज़्यादा मजदूरी दे रहा था। मज़दूरों की संख्या भी उससे ज़्यादा था। पर भूषण के मज़दूर समय पर आते थे और निर्धारित कार्य को पूरा करने के बाद निर्धारित समय पर चले जाते थे। बीच-बीच में बातें करते हुए अपना समय व्यर्थ नहीं करते थे। कहीं जाते भी नहीं और काम सुचारू ढंग से करते थे। किन्

- जयशंकर -

नारायण के मजदूर मनमानी करते थे। देर से आते थे और समय से पहले ही चले जाते थे।

मज़दूरों को काबू में रखने के लिए नारायण ने तालाब के चारों ओर घेरा लगवाया। नियम बनाया कि देरी से आनेवाला अंदर नहीं जा सकता। और काम के बीच में कोई भी बाहर नहीं जा सकता। मज़दूर बातों में मशगूल न हों, इस पर निगरानी रखने के लिए निरीक्षकों को भी नियुक्त किया। अब मज़दूर समय पर आने लगे और समय पर ही जाने लगे। आपस में कानाफूसी भी कम हो गयी। फिर भी काम तेज़ी से नहीं हो रहा, उधर भूषण के तालाब की खुदाई का काम पूरा होने जा रहा था।

नारायण को लगा कि इसमें कोई राज़ है। यह जानने के लिए वह भूषण से मिलने गया।

''फ़र्क मज़दूरों में नहीं, तुममें है। तालाब की खुदाई के लिए राजा की निधियों का खर्च कर रहे हो, जबकि मैं अपना धन खर्च कर रहा हूँ।'' भूषण ने कहा।

''फिर भी काम तो मज़दूर ही करते हैं। फ़र्क हो तो उन्हीं के कारण होना चाहिए।''

भूषण ने उसके तर्क को न मानते हुए कहा, ''चूँकि धन राजा का है, इसलिए उसमें से निर्धारित भाग मज़दूरों को दे रहे हो। चूँकि धन मेरा अपना है, इसलिए मैं निर्दिष्ट कार्य के लिए निर्धारित मज़दूरी देता हूँ। तुम्हारे मजदूरों को मालूम है कि काम पूरा करो न करो, उन्हें तो मज़दूरी मिलती रहेगी। मेरी पद्धति कुछ ऐसी है, जिसमें निर्धारित काम हो जाने पर ही उन्हें पूरी मज़दूरी मिलेगी। जितना ज़्यादा काम वे करेंगे, उतनी अधिक मज़दूरी उन्हें मिलती है। इसलिए वे काम में चुस्ती दिखाते हैं। अब तुम जान चुके होगे कि फ़र्क कहाँ है?''

नारायण अब जान गया कि ग़लती कहाँ है? किसकी है? उसने भी भूषण की पद्धति अपनायी और तालाब की खुदाई का काम यथाशीघ्र पूरा हो गया।

## केरल की एक लोक कथा

केरल को, अपने विस्मयकारी सौन्दर्य विस्तीर्ण अप्रवाही जल, नीले समुद्रताल तथा ताल वृक्षों की कतारों से सुसज्जित समुद्र तटों के कारण 'भगवान का अपना देश' कहकर, प्रायः इसकी चर्चा की जाती है।

केरल को अपना नाम मलयालम शब्द 'केरा' से मिला है जिसका अर्थ नारियल होता है। यह भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक है। इसका क्षेत्रफल केवल ३८ हजार ८५५ वर्ग कि.मी. है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का एक प्रतिशत है। यहाँ की जनसंख्या ३ करोड़ १८ लाख ३८ हजार ६१९ है।

केरल राज्य का निर्माण सन् १९५६ में किया गया जब तीन पृथक क्षेत्रों - ट्रावनकोर और कोचीन जो राजतांत्रिक राज्य थे, तथा मालाबार जो मद्रास प्रेसिडेंसी का भाग था, को एक साथ मिला दिया गया। यह राज्य अरब सागर और पश्चिमी घाट के बीच एक संकीर्ण स्थल पट्टी के रूप में ४८३ कि.मी. तक फैला हुआ है। इसके उत्तर में कर्नाटक, पूरब में तमिलनाडु और पश्चिम में अरब सागर है। केरल को बहुत पहले शत प्रतिशत साक्षरता उपलब्ध करनेवाले भारत के एक मात्र राज्य होने की विशिष्टता प्राप्त है।

# एक स्थिति को संभाला, परन्तु...

उसे सभी ''कायमकुलम कोचनी'' कह कर पुकारते थे, क्योंकि वह ट्रावनकोर के उसी गाँव का रहनेवाला था जो कभी राजतांत्रिक राज्य था और अब केरल का हिस्सा है। और कायमकुलम अथवा आस पास के गाँवों में बहुत कम लोग उसके समान क्षात्रधर्मी और उदार थे।

दो सौ वर्ष पहले गरीब माता-पिता के घर जन्मे कोचुनी एक ईश्वर भक्त मुसलमान था। वह दिन में पाँचों बार निसकरम (नमाज) के लिए

पळ्ळी (मस्जिद) जाना कभी नहीं भूलता था। कभी-कभी वह पळ्ळी से बंगुविली (नमाज के लिए पुकार) नहीं सुन पाता था, फिर भी जहाँ भी होता, अपना तौर्त (तौलिया) जमीन पर बिछा देता और पश्चिम की ओर मुखातिब हो उस पर बैठ कर अल्लाह को नमाज भेंट करता।

शायद वह अपने बचपन में गरीबी की दयनीय अवस्था से गुजरा था, इसलिए कंजूसों, महाजनों, और जमीन्दारों के प्रति उसके मन में विद्वेष की भावना आ गई थी। फिर भी यह भाग्य की विडम्बना थी कि उसे एक धनी व्यापारी की दुकान पर नौकरी करनी पड़ी जो उसे एक उदार-हृदय भद्र पुरुष के आदेश पर मिली थी । कोचुनी ने उस भद्र पुरुष से नौकरी के लिए अनुरोध किया था। वह काडा (दुकान) पर ईमानदारी से परिश्रम करता था और उसका मालिक उससे खुश था। उसने कोचुनी को ग्राहकों से शिष्ट व्यवहार करने तथा उनके साथ लेनदेन में ईमानदारी बरतने की शिक्षा दी थी।

कोचुनी हर सुबह व्यापारी के घर से चाभी लाता, दुकान खोलता और अपने मालिक की प्रतीक्षा करता था। सन्ध्या समय व्यापारी के घर चले जाने के बाद दुकान की सफाई कर दरवाजा बन्द करता और व्यापारी के घर चाभी रख देता। तब तक व्यापारी की पत्नी उसके लिए खाना बना कर तैयार रखती जिसे वह घर ले जाकर अपनी विधवा माँ के साथ मिल-बाँट कर खाता।

एक शाम को जब कोचुनी व्यापारी को चाभी देकर अपने घर जा रहा था, एक स्थायी ग्राहक जल्दी में व्यापारी से मिलना चाहता था। ''क्या

## जनश्रुति

एक लोकप्रिय जनश्रुति के अनुसार विष्णु के अवतार परशुराम ने केरल की सृष्टि की । ऋषि, परशुराम ने २१ क्षत्रिय राजाओं को मारने के पश्चात तपस्या करने के लिए देवताओं से एक एकान्त स्थान की याचना की। देवताओं ने कहा कि वे अपने लिए ऐसा स्थान स्वयं चुन लें। इसलिए परशुराम ने गोकर्ण पर्वत पर खड़े होकर अपना परशु समुद्र में फेंका । जहाँ पर परशु गिरा, वहाँ तक समुद्र जल सूख गया और स्थल निकल आया। ऐसा विश्वास है कि वही स्थान केरल कहलाया।

# लोक नृत्य

केरल में लोक नृत्य की एक समृद्ध परम्परा है। इनकी अधिकांश शैलियों को विकसित होने में कई शताब्दियाँ लगी हैं। एकल अभिनय 'कूतू' यहाँ की सबसे प्रसिद्ध कला है। इसमें कलाकार जो 'चकयार' कहलाता है सभी चरित्रों का अभिनय स्वयं करता है। सामान्यतः 'कूतू' विशेष रूप से बनाये गये एक बड़े कक्ष में प्रदर्शित किया जाता है जिसे 'कूतमबलम' कहते हैं।

'कूडीयत्तम' केरल की प्राचीनतम नाट्य शैली है। 'कथकली' केरल की सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य-नाट्य शैली है। जटिल और राजसी वेशभूषा, रूप सज्जा और भड़कीला शिरोसाज कथकली की विशिष्टताएँ हैं। इनकी विषयवस्तु प्रायः पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है। यहाँ की अन्य प्रचलित नृत्य शैलियाँ हैं - मोहिनीयत्तम, थुलल, कैकोटिकली आदि।



आपने दुकान बन्द कर दी है मुतालाली (दुकान का मालिक)?'' वह काफी बेचैन लग रहा था।

''हाँ'', व्यापारी ने कहा। ''क्यों, क्या तुम्हें कुछ चाहिये?'' ''मुझे शर्कर की सख्त जरूरत है मुथालाली।'' ग्राहक ने सांस लेते हुए कहा। ''मेरे छोटे बेटे का कल जन्मदिन है और मुझे सुबह मन्दिर में नैवेद्यम की व्यवस्था करनी है। जब मैं घर गया तब मेरी पत्नी ने कहा कि घर में शक्कर का एक दाना भी नहीं है। पुजारी को पायसम (मिष्टान्न) बनाने के लिए क्या देंगे? अब इस समय यह कहीं नहीं मिल सकता। क्या आप कृपा करेंगे?''

''हं, देखते हैं।'' व्यापारी ने कहा। कोचुनी फाटक तक जा चुका था। ''कोचुनी! कोचुनी! यहाँ आओ। यह हमारा स्थायी ग्राहक है। इसे दुकान पर ले जाओ। इसे शक्कर की सख्त जरूरत है।''

''मैं अभी जाता हूँ एमन (मालिक)'', कोचुनी

## हस्त शिल्प

केरलवासी कलात्मक प्रतिभा के लिए विख्यात हैं। यहाँ के शिल्पकार समुदाय अपने को देवताओं के वास्तुकार विश्वकर्मा के वंशज बताते हैं। पाषाण अथवा धातु पर उत्कीर्णन की अपेक्षा यहाँ काष्ठ उत्कीर्णन अधिक होता है जैसा कि प्राचीन मन्दिरों और स्थानों से स्पष्ट है। बेंत की बुनाई और हाथी के दाँतों पर उत्कीर्णन भी इस राज्य का महत्वपूर्ण शिल्प है, यद्यपि आजकल हाथी के दाँतों के उपयोग पर प्रतिबन्ध है। नारियल की खोपडी पर उत्कीर्णन केरल की विशेषता है।

केरल कांस्य कर्म के लिए भी प्रसिद्ध है। देवी-देवताओं की मूर्तियाँ कांस्य धातु से बनाई जाती हैं। लैम्प बनाना यहाँ का एक अन्य लोकप्रिय शिल्प है। यहाँ अनेक आकार-प्रकार के लैम्प बनाये जाते हैं। एक परम्परागत लोकप्रिय शिल्प है - धातुदर्पण निर्माण। यह शिल्प चार सौ वर्ष पुराना माना जाता है। ये दर्पण ताम्बे के मिश्रण से बनाये जाते हैं और आकार में प्रायः अण्डाकार होते हैं।

नारियल-जटा से उपस्करण के साज-सामानों का निर्माण केरल में बहुत लोकप्रिय है। नारियल-जटा से निर्मित चटाइयाँ तथा कालीनें बेजोड़ होती हैं।

ने कहा। फिर वह ग्राहक की ओर मुड़ा और बोला, "अंगुने (महाशय), कृपया मेरे साथ चलें।"

कोचुनी और ग्राहक दोनों दुकान की ओर तुरत चल पड़े। जब वे दुकान पर पहुँच गये जो व्यापारी के घर से काफी दूर थी, तब कोचुनी को याद आया कि वह दुकान की चाभी लाना ही भूल गया। जब वह व्यापारी की पत्नी से खाना ले रहा था तभी उसने उसे दुकान की चाभी दे दी थी। उसने बरामदे में अपना केट्टू (गठरी) छोड़ दिया था कि घर वापस जाते समय वह उसे ले लेगा।

"कृपया क्षमा करें, महोदय!" कोचुनी ने

विनम्रता से कहा। "मैं थकोल (चाभी) लाना भूल गया। मुझे बहुत खेद है।"

"थकोल के बिना कैसे दुकान खोलोगे? तुम निरे कोशावा (मूर्ख) हो।" नाराज होते हुए ग्राहक ने टिप्पणी की। "और तुम्हें मालूम है, मुझे शक्कर की कितनी सख्त जरूरत है।"

"अंगुने, यदि मैं आप को निराश करता हूँ तो मैं संकट में पड़ जाऊँगा। मुथालाली मुझ पर गालियों की बौछार कर देंगे। मुझे थोड़ा समय दीजिये। मैं कोई उपाय सोचता हूँ।" कोचुनी ने सिर खुजलाते हुए कहा।

उसने दुकान पर एक पैनी नजर डाली। उसे एक करतब की याद आ गई जो उसने कलारी (जिमखाना) में सीखा था। वह अचानक दुकानों की गली में से खपरैल छत पर चढ़ गया। जब ग्राहक बाहर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था, वह दुकान के पिछवाड़े में नीचे उतर कर किसी प्रकार पिछले दरवाजे को खोलने में सफल हो गया। फिर अन्दर जाकर उसने गुड के दो ढेलों की पुड़िया बनाई और जैसे वह अन्दर गया था, वैसे ही वह बाहर आ गया।

ग्राहक खुश था। "मुझे नहीं" मालूम था, तुम इतने उपाय-कुशल हो। और हाँ, मुथालाली को मेरी ओर से शुक्रिया अदा करना न भूलना।" उसने कोचुनी के हाथ में कुछ सिक्के देते हुए कहा और अपने घर की ओर चलता बना।

कोचुनी प्रसन्न था क्योंकि उसने ग्राहक को निराश नहीं किया। बेशक, उसका मालिक भी उतना ही प्रसन्न होगा। उसने ग्राहक को नहीं खोया।

व्यापारी बड़ी बेचैनी से कोचुनी का इन्तजार कर रहा था। "तुम तो थाकोल को यहीं पर छोड़ कर चले गये पहया (बदमाश)! और वह ग्राहक कहाँ है?" उसने कोचुनी को दूर से आते हुए देखते ही डाँट कर पूछा।

"वह शर्कर लेकर घर चला गया।" उसने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा। "मैंने उसे गुड़ के दो टुकड़े दिये और उसने उसकी कीमत चुका दी। ये हैं पैसे, मुथालाली।" यह कहते हुए उसने मालिक के हाथ में सिक्के दे दिये।

ऐसा लगा जैसे मालिक को खुशी नहीं हुई। "चाभी के बिना दुकान कैसे खोली? उसने पूछा।

"मैंने दुकान नहीं खोली, मुथालाली।" कोचुनी ने सब बता दिया कि कैसे उसने बिना ताला खोले

दुकान से शर्कर निकाल कर ग्राहक को दिया।

''लगता है तुम्हें थोड़ी-सी थालाचोर (बुद्धि) है, कोचुनी।'' व्यापारी ने टिप्पणी की। ''ठीक है, अब घर जाओ।'' कोचुनी ने बरामदे में रखा अपना केट्टू उठाया और घर चला गया।

अगले दिन सुबह जब वह चाभी लाने गया तब पता चला कि मालिक पहले ही दुकान पर जा चुका है। वह भी जल्दी से दुकान पर पहुँचा। मालिक नाराज दिखाई पड़ा। ''कोचुनी, मैंने कल रात की घटना पर बिचार किया। मुझे गलत न समझना। मैंने तुम्हें नौकरी से हटाने का निश्चय किया है। कौन जानता है कि संकट आने पर ऐसी हरकत दुबारा नहीं करोगे? तुममें अब मेरा विश्वास न रहा। यह रहा तुम्हारा कूली (मजदूरी)। यह ले लो और कहीं और नौकरी देख लो।''

## पर्यटन-स्थल

केरल पर्यटकों का स्वर्ग है। राज्य का सम्पूर्ण क्षेत्र प्राकृतिक सुषमा के लिए विख्यात है। यहाँ वन्य प्राणियों के लिए अनेक अभयारण्य हैं। इडुकी जिले के थेकडी में स्थित पेरियार अभयारण्य सर्वाधिक विख्यात है। यह पेरियार नदी के ऊपर के बांध से निर्मित विशाल जलराशि - पेरियार झील के चारों ओर बनाया गया है। इस अभयारण्य को सन् १९७८ में 'टाइगर योजना' के अन्तर्गत टाइगर आरक्षित क्षेत्र (टाइगर रिजव) घोषित किया गया। यह असंख्य पशुओं का भी घर है जैसे - हाथी, गबल, हिरण, तेंदुआ, सूरज भगत, नेवला आदि। हाथी के झुंडों को झील के पानी में खेल-कूद करते और पानी उछालते देखना बड़ा आनन्ददायक लगता है।

मुनार का पहाड़ी स्थल, कोचीन का ताल वृक्षों से कतारबद्ध अप्रवाही जल प्रसार, अथिरमपल्ली के विस्मयकारी जलप्रपात और त्रिवेन्द्रम के निकट कोवलम जैसे समुद्री तट - ये कुछ लोकप्रिय पर्यटन आकर्षण हैं।

कोचुनी अवाक् रह गया। उसकी सत्यनिष्ठ सेवा और ईमानदारी के बावजूद उसके मालिक ने उसके बारे में रात भर में अपना विचार बदल दिया। उसे माफी माँगने का मन नहीं हुआ। मेज पर रखे पैसे उसने उठाये और बिना कुछ बोले वहाँ से चला गया। इसी घटना से उसके मन में धनी लोगों के प्रति घृणा हो गई।

# समाचार झलक

## गुजरात में अश्वमेध याग

हम लोगों ने श्रीराम और युधिष्ठिर द्वारा अनुष्ठित अश्वमेध याग के बारे में सुना है। इस याग का आधुनिक संस्करण, जिसमें यद्यपि धार्मिक कृत्यों और विधियों का कठोरतापूर्वक पालन किया जायेगा, गुजरात में सम्पन्न होनेवाला है, जो सन् २००१ में भूकम्प से तबाह हो गया था। आयोजकों ने काष्ठ का एक अश्व निर्मित करवाया है जो उत्तर केरल के कनहंगद में बनाया गया है। सात फुट लम्बे और छः फुट ऊँचे घोड़े का उत्कीर्णन एक सम्पूर्ण आम वृक्ष में तमिलनाडु के कलकुरिचि निवासी स्वामी दुरई द्वारा किया गया है। इस आकार को गढ़ने में इसे लगभग एक महीना लगा और दूसरे पन्द्रह दिनों में उसने अलंकरण तथा अन्य आकर्षक रूपरेखाएँ बनाईं। पीतल-आवरण से सुसज्जित करने के पश्चात् इसे लोगों के द्वारा दर्शन किये जाने और भेंट-चढ़ावे के लिए १५ दिनों तक रेल के खुले डिब्बे में रख कर घुमाया गया। घोड़े के साथ रहनेवाले यात्रा के १५ दिनों तक मंत्रोच्चारण करते रहे।

## नीरवता दिवस

जब भारत के अनेक भागों में १३ अप्रैल को समवर्ती उत्सवों के साथ नव वर्ष दिवस मनाया जा रहा था, हिन्देशिया के एक बड़े द्वीप बाली में यह नीरवता का दिवस था। मुख्यतः हिन्दू आबादी के इस द्वीप के लोग इस दिवस को मनाने के लिए घर पर रहे, कार्य और यात्रा का वर्जन किया और शोर करनेवाले विद्युत उपकरणों के प्रयोग का बहिष्कार किया। सभी मनोरंजन कार्यक्रम बन्द कर दिये गये। किसीने टेलिविजन अथवा रेडियो का प्रयोग नहीं किया। टेलिफोन चुपचाप रहे। पर्यटक होटल के कक्षों में शान्त बैठे रहे। कोई वायुयान नहीं उड़ा। जलपोतों ने लंगर डाल दिया। विगत रात्रि में अनुष्ठान आरम्भ कर दिये गये जिसमें नरक दूतों को समुद्र में खदेड़ दिया गया और अगले दिन, जो राष्ट्रीय अवकाश दिवस था, द्वीप में उन्हें वापस आने से रोक दिया गया।

# विघ्नेश्वर

कुमारस्वामी के मन में अपने विवाह में विघ्न डालने वाले विघ्नेश्वर के प्रति क्रोध था। उन्होंने अपनी माँ से कहा-"माँ, बड़े भाई अयोग्य हैं, तो योग्य कैसे बन सकते हैं? वे तो खाऊ ठहरे, ऐसे लोग महान कार्य कैसे कर सकते हैं?"

विघ्नेश्वर की आँखों में आँसू छल छला गये। वे बोले - "माँ, देखती हो न! छोटा भाई कैसी बातें करता है!..." इस पर पार्वतीजी को क्रोध आ गया। विघ्नेश्वर को अपने हृदय से लगाकर उन्हें समझाते हुए बोलीं - "बेटा, मैंने जो गुड़िया बनाई, तुम्हारे पिता ने उसे मार डाला और यह यों मजाक उड़ा रहा है। उनका यह अज्ञान उनके लिए लज्जा की बात होगी!"

"माँ, छोटा भाई तो अज्ञानी हो सकता है, लेकिन पिताजी कैसे हो सकते हैं? यह तो तुम्हारा भ्रम है! पागलपन है।" गणपति ने पूछा।

पार्वती ने सर झुका कर कहा - "बेटा, पागलपन मेरा नहीं, उस महादेव शंकरजी का है। वरना विष्णुदेव के जगन्मोहिनी के अवतार को देख उनके पीछे पड़ जाते! और मज़ाक का कारण बन जाते?"

"इसके बाद क्या हुआ, माँ?" गणपति ने पूछा। "कोई अनहोनी घटना ही घट गई! सुना है कि उनके बीच भैरव नामक एक काले रंग का भूत जैसा लड़का हुआ है।" माँ ने समझाया।

"माँ, यह बताओ, वह भैरव नाम का लड़का कहाँ रहता है? मैं उसको देखना चाहता हूँ।" विघ्नेश्वर ने पूछा।

८. प्रमथगणों का नेतृत्व

''वह कहीं रहता है, सुना है कि वह काले कपड़े पहनता है। उसके पास भूल से भी मत जाओ, उसे देख तुम डर जाओगे!'' पार्वती ने समझाया।

''माँ, डरना क्या होता है? यह भी तो मुझे जानना है?'' विघ्नेश्वर ने पूछा। ''शादी करने पर मालूम हो जाएगा!'' पार्वती ने कहा।

''ओह, पति-पत्नी का अर्थ ऐसा भयंकर होता है! इसीलिए तो माँ, मैं शादी करना नहीं चाहता!'' गणेश ने कहा।

इस पर कुमारस्वामी बीच में दखल देते हुए बोले - ''यही एक तुम महान कार्य करना चाहते हो, भैया? मैं अभी जाकर सूर्य की परिक्रमा करके लौट आता हूँ।'' यों कहकर कुमारस्वामी मोर पर सवार हो उड़ चले। इसके बाद विघ्नेश्वर सीधे जाकर मेरु पर्वत पर चढ़कर सबसे ऊँचे शिखर पर बैठ गये। सूर्य मेरु पर्वत की परिक्रमा किया करते हैं! वहाँ पर कभी सूर्यास्त नहीं होता।

कुमारस्वामी बड़ी मेहनत के साथ जब सूर्य की परिक्रमा करके लौट आये, तब अपने बड़े भाई को मेरु पर्वत पर बैठे देख कर लज्जित हो उठे! पार्वती ने आश्चर्य में आकर कुमारस्वामी से पूछा - ''हे कुमार, तुम सर झुकाये क्यों बैठे हो? आखिर बात क्या है?''

''मैं सूर्य की परिक्रमा करके आया, जब कि भैया सूर्य को ही अपने चारों तरफ़ घुमा रहे हैं। सच बताना हो तो बड़े भाई का कार्य ही महान है!'' कुमारस्वामी ने कहा।

इस घटना के थोडे दिन बाद पार्वतीजी ने फिर से विघ्नेश्वर की शादी की बात उठाई! इस पर विघ्नेश्वर ने जवाब दिया - ''माँ, सुंदरता में तुम्हारी बराबरी करने वाली कोई युवती दिखाई दे तो मैं ज़रूर शादी करना चाहता हूँ।''

पार्वती का दिल कचोट उठा, वह बोलीं - ''तब तो तुम बरामदे में बैठकर आने-जाने वाली कन्याओं को देखते रहो!'' यों कहकर वह चली गईं।

''जैसी तुम्हारी आज्ञा, माँ!'' यों कहकर विघ्नेश्वर गली में बैठकर थोड़ी देर पूरब की ओर, फिर पश्चिम दिशा में, इसी तरह आठों दिशाओं की ओर मुखातिब हो देखने लगे।

विघ्नेश्वर की इन विचित्र चेष्टाओं को देख पार्वती ने पूछा - ''क्यों बेटा, कहीं तुम्हें कोई सुंदर कन्या दिखाई दी?''

विघ्नेश्वर बोले - ''माँ, मैं जिस किसी भी दिशा में देखता हूँ तो उस दिशा में जगज्जननी बनी तुम्हीं आठ हाथों के साथ दिखाई देती हो।''

ये बातें सुनकर पार्वतीजी प्रसन्नता के मारे तन्मय हो उठीं और बोलीं - ''बेटा, विघ्नराजा, यह नियम है कि सभी देवताओं को पूरब की ओर मुख करके पूजा प्राप्त करनी चाहिए, लेकिन तुम चाहे जिस किसी भी दिशा में मुखातिब हो जाओ, पूजा पाने योग्य हो !'' यों पार्वतीजी ने गणेशजी को वरदान दिया। इसके बाद पार्वतीजी विनायक की शादी की बात भूलकर अपने प्यारे पुत्र की मीठी-मीठी बातें शिवजी को सुना-सुनाकर खुश होने लगीं।

कुछ दिन बाद पार्वतीजी ने हठ पूर्वक विघ्नेश्वर की शादी का प्रसंग उठाया, तब विघ्नराजा ने समझाया - ''माँ, छोटे भाई देवताओं के सेनापति के पद को संभाले हुए हैं। वह एक क्या, दो कन्याओं के साथ भी शादी कर सकता है। मैं बैठे-बैठे अपना पेट भरता हूँ। तुम्हीं बताओ, ऐसी हालत में मैं कैसे शादी कर सकता हूँ?''

इस पर शिवजी ने समझाया - ''तुम मेरे सारे प्रमथ गणों के गणपति बन जाओ!''

''पिताजी, आप यह प्रेमवश कह रहे हैं, लेकिन योग्यता भी तो होनी चाहिए। छोटा भाई सेनापति के काम में कुशल बन गया है। उसके रहते मुझे उस पद पर बैठने का अर्थ ही क्या है?'' विघ्नेश्वर ने सवाल उठाया।

प्रमथों ने कुमारस्वामी को ही चुना। पर शिवजी ने कहा - ''नहीं, मेरे गणों का गणनाथ विघ्नेश्वर ही हो सकता है। कुमारस्वामी तो देवताओं के
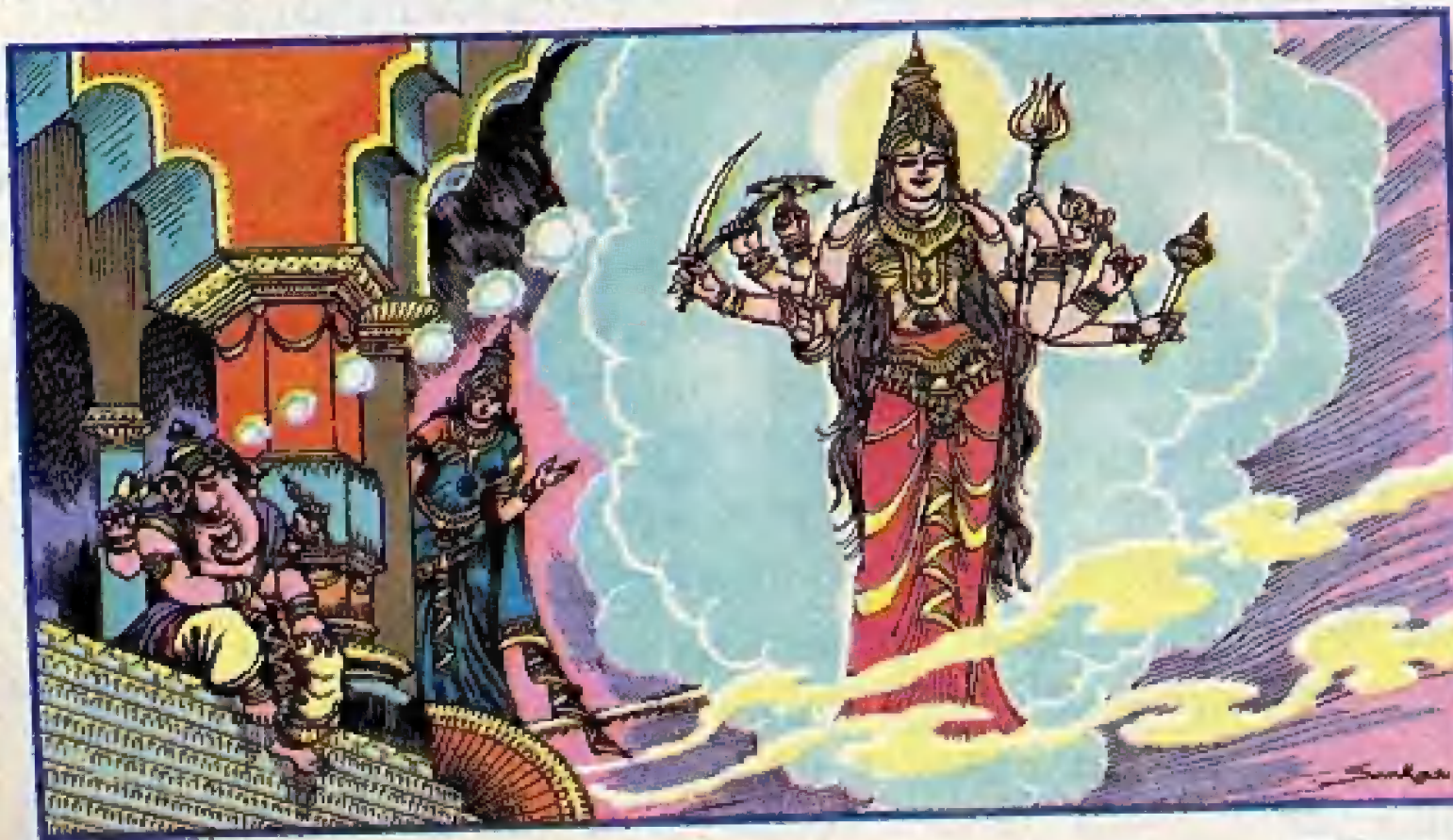
सेनापति के पद पर पहले से है ही! अलावा इसके एक साथ दो पद संभालना कठिन भी है!''

विघ्नेश्वर ने कहा - ''पिताजी, मेरे ख्याल से कोई परीक्षा लेकर उसमें सफल होनेवाले को गणों का अधिपति बनाना उचित होगा।''

इस पर देवताओं तथा प्रमथों ने मिल कर एक परीक्षा रखी। वह यह थी कि पृथ्वी पर के समस्त तीर्थ और पुण्य क्षेत्रों की जो व्यक्ति पहले परिक्रमा करके लौटेगा, वही विजयी माना जाएगा।

इस शर्त के मुताबिक कुमारस्वामी मोर पर सवार हो उड़ चले, पर विनायक लुढ़क कर बैठ गये।

उस वक्त विष्णु विघ्नेश्वर को एकांत में ले जाकर बोले - ''बेटा, हम तुम्हारे प्रति बहुत ज्यादा वात्सल्य भाव रखते हैं, तुम्हारी हार सभी देवताओं की हार मानी जाएगी। हमारा अपमान कराना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। अलावा इसके अपने पिता की महानता को साबित करने पर ही पुत्र का जन्म सार्थक होता है। तुम्हें परिक्रमा करने की ज़रूरत नहीं है। हमारे कहे मुताबिक करो।'' इन शब्दों के साथ विष्णु ने विनायक के कान में गुप्त रूप से कोई उपदेश किया।

पार्वतीजी ने ठण्डी साँस लेकर विष्णु की ओर कृतज्ञता पूर्ण दृष्टि दौड़ाई।

इसके बाद विघ्नेश्वर आसन लगाकर आँखें मूँदकर शिव पंचाक्षरी मंत्र का जाप करने लगे।

कुमारस्वामी जहाँ भी गये, वहाँ पर उन्हें यह समाचार मिलता रहा कि उनसे पहले ही विघ्नेश्वर चूहे के वाहन पर आकर उस तीर्थ में स्नान करके चले गये हैं। इस पर उन्हें आश्चर्य होने लगा। वे निराश हो लौट आये और अपनी हार मानते हुए विघ्नेश्वर को विजयी घोषित किया।

विघ्नेश्वर अपने छोटे भाई के हाथों में हाथ डाले शिवजी के पास ले गये और उन्हें सच्चा समाचार सुनाया - ''मेरे छोटे भैया! न मेरी जीत हुई है और न तुम्हारी हार! हम दोनों केवल निमित्त मात्र हैं। जीत तो पिताजी की ही हो गई है। क्योंकि शिव पंचाक्षरी की महिमा ही कुछ ऐसी है! जीत शिवनाम की हुई और जिताने वाले श्री महा विष्णु हैं!''

इसके बाद विघ्नेश्वर और कुमारस्वामी ने अपने पिता के एक-एक चरण पकड कर उन्हें प्रणाम किया।

कुमारस्वामी सभी लोगों के बीच खड़े होकर बोले - ''विघ्नेश्वरजी के लिए प्रमथ गणों का

अधिपति होने का पट्टाभिषेक शीघ्र होना चाहिए। शिवजी की आज्ञा सबके लिए शिरोधार्य है।''

इस पर देवता खुश हुए। सिद्ध, साध्य, यक्ष, भूत गण आदि बहुत ही प्रसन्न हो उठे। प्रमथ गणों के प्रमुख व्यक्ति भृंगीश्वर, शृंगीश्वर, चंडीश्वर और नंदीश्वर ने इसका विरोध किया। इसका कारण यह था कि इसके पूर्व विघ्नेश्वर ने पुत्र गणपति के रूप में उनके घमण्ड को तोड़ डाला था।

इसी वजह से उन लोगों ने अपना क्रोध प्रकट करते हुए कहा - ''कुमारस्वामी तो देवगणों की सेनाओं के अधिपति हैं, हम लोग पहले से ही शिवजी के विश्वासपात्र शिवगण के रूप में माने जाते हैं। ऐसी हालत में विघ्नेश्वर हमारे अधिपति कैसे बन सकते हैं? गणपति कहलाने के लिए भी तो उनका अपना कोई दल या गण नहीं है। ऐसी स्थिति में गणाधिपति होने का पट्टाभिषेक ही क्यों?''

ये बातें सुन शिवजी नाराज़ हो गये और प्रथम गणों को डांटते हुए बोले - ''क्या तुम लोग मेरे निर्णय की आलोचना करनेवाले बड़े लोग हो गये हो !''

विघ्नेश्वर शांत चित्त हो बोले - ''हाँ, हाँ, ये लोग ठीक ही कहते हैं! मेरे गण कहाँ पर हैं? कहाँ? नहीं हैं! शायद नहीं हैं! हाँ, जब पुत्र गणपति के रूप में था, उस समय मेरा अपना दल था, मुझे ऐसा स्मरण आता है। लेकिन अब वे गण कहाँ पर हैं?''

इस पर करोड़ों विघ्नेश्वर जैसे लोग सभी दिशाओं से चले आये और विघ्नेश्वर के गणों के रूप में खड़े हो गये।

उन सबके चार हाथ थे और चारों हाथों में

अनेक प्रकार के आयुध, उपकरण तथा चित्र-विचित्र वस्तुएँ थीं। कुछ लोगों के हाथों में लेखनियाँ, कूंचियाँ व रंग थे तो कुछ लोगों के हाथों में शूल, धनुष-बाण, तलवार व गदा थे। कुछ लोगों के हाथों में हँसियाँ, हथौड़े, तलवार, करौत, छेनियाँ आदि थीं, तो कुछ लोग वीणा, मृदंग, मुरली और डफलियाँ बजा रहे थे। कुछ लोग जड़ी-बूटियाँ, औषध, हल, करघे, रत्नाभूषण, फूल-मालाएँ, फल आदि अपने हाथों में लिये हुए थे। उनके बीच देवता तथा प्रमथ गण यत्र-तत्र दिखाई दे रहे थे।

विघ्नेश्वर रूपधारी कुछ लोग आसमान में उड़ते अंतरिक्ष की ओर बढ़ रहे थे। उन गणों के अधिपतियों के हाथों में चँवर आदि डोल रहे थे। उनके हाथों में लाल तथा अन्य कई रंगों के झण्डे थे, जो आसमान में फहरा रहे थे। दो लोग रत्न खचित एक सिंहासन को ले आये। विघ्नेश्वर को उस पर बिठाया, तब छत्र व चँवर धारी आ खड़े हुए। श्वेत छत्र मोतियों के झालर के साथ सुशोभित हुआ। छोटा चूहा सिंहासन के नीचे नाचने लगा। इस पर पार्वती एक बार और अपने को भूलकर सिंहासन पर विराजमान विघ्नेश्वर को प्रणाम करने को हुईं, तब विघ्नेश्वर अपने हाथ के संकेत से मना करते हुए बोले - "माँ, ऐसा मत करो, मैं तुम्हारा प्यारा पुत्र हूँ।" उस वक्त सब लोग अदृश्य हो गये। विघ्नेश्वर अकेले रह गये। उन्होंने विनयपूर्वक अपनी माता को प्रणाम किया।

उसी वक्त "विघ्नेश्वर!" नाम की पुकार शंख ध्वनि जैसी सुनाई दी। पुकारने वाले विष्णु थे, विघ्नेश्वर ने उस ओर देखे बिना कहा - "हाँ, मैं जानता हूँ कि आप क्या कहने जा रहे हैं?"

"तुम्हें मालूम हो, पर सबको मालूम होना चाहिए न! यही बात मैं कहता हूँ।" इन शब्दों के साथ विष्णु ने समझाया - "इस कहावत के मुताबिक कि विघ्नेश्वर के विवाह के लिए एक हजार विघ्न होते हैं, विघ्नेश्वर ने भी अपनी शादी में जो एक हजार विघ्न पैदा कर लिये थे, वे पूरे हो गये, अब आगे विघ्न पैदा करना संभव नहीं है, अगर पैदा भी कर ले तो वह चलने का नहीं।"
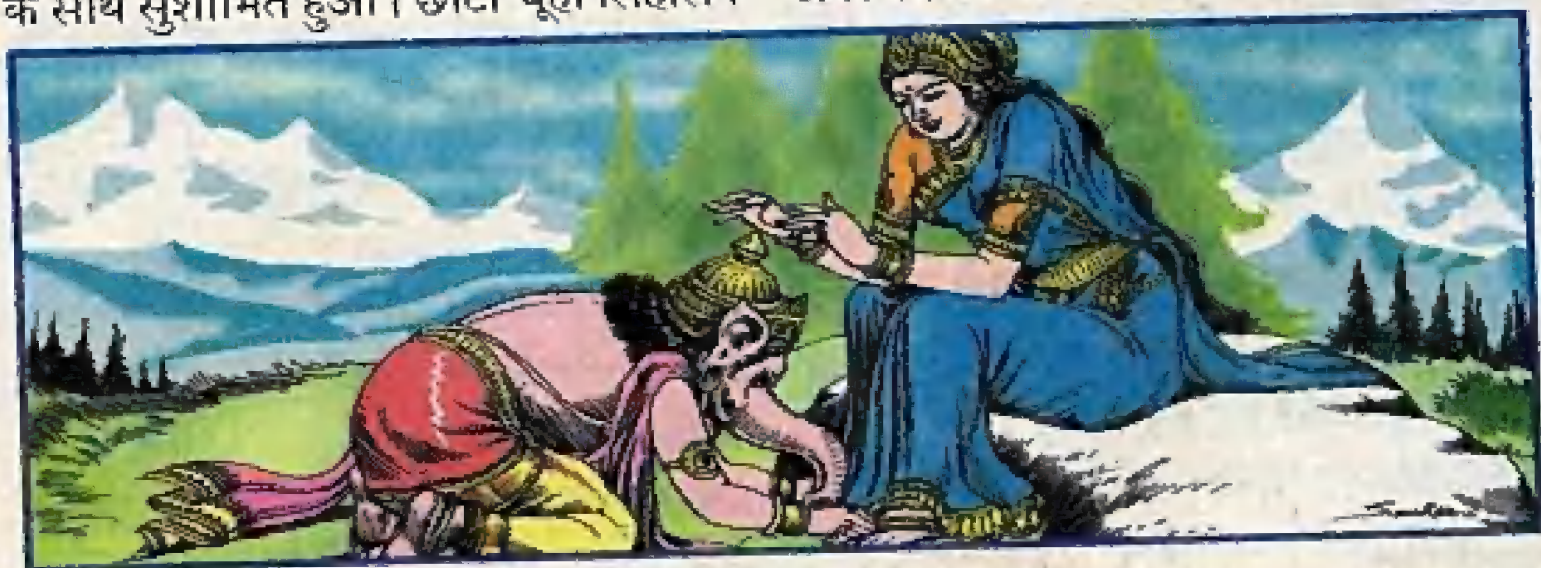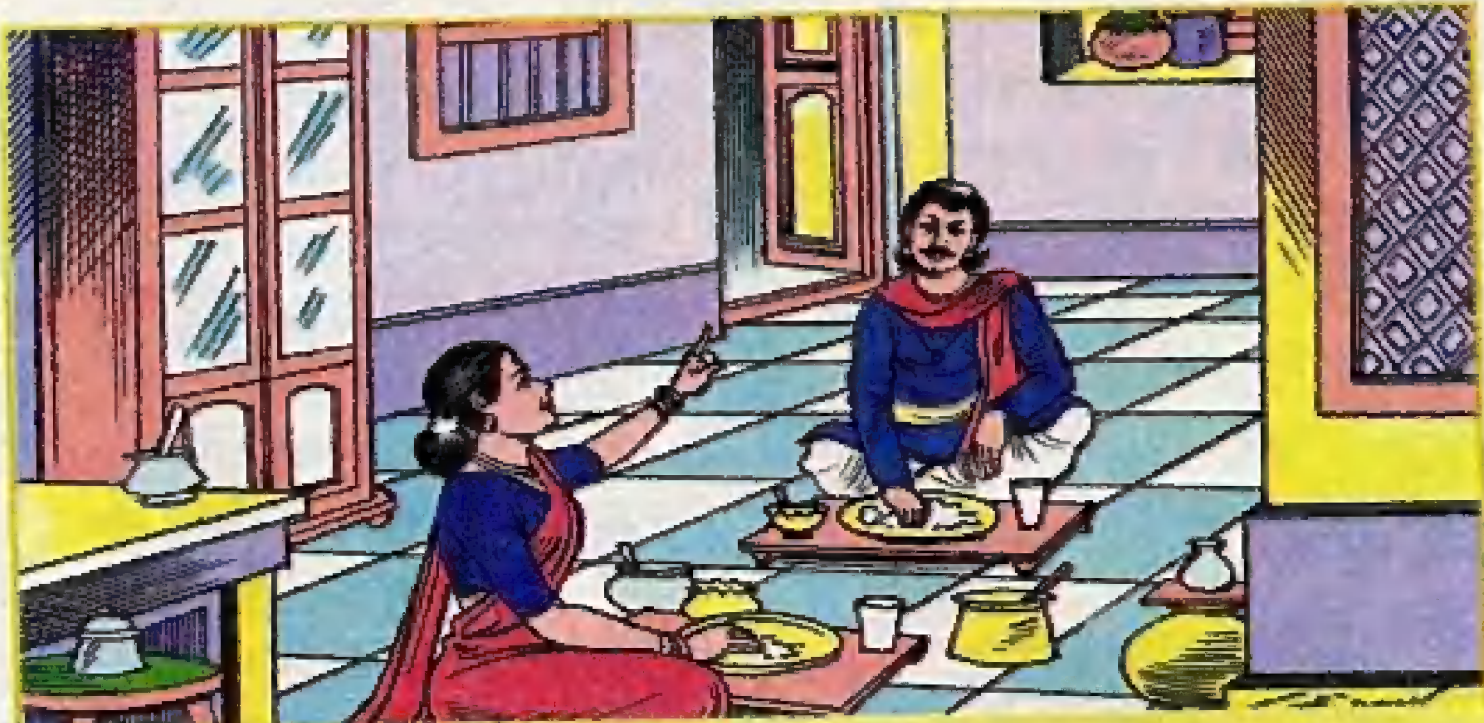
# रामापुर का रिश्ता

रंगनाथ के कपड़ों की दूकान बड़े बाज़ार में थी। एक दिन दूकान बंद करने के बाद जब वह घर लौटा, तब उसकी पत्नी सरला हँसती हुई सामने आयी। चार दिन पहले वह अपने बड़े भाई के बेटे के जन्म-दिन पर मायके गयी थी और आज ही दुपहर को लौटी थी।

भोजन परोसने के बाद सरला ने अपने पति रंगनाथ से कहा, "मेरे भाई ने हमारे बेटे के लिए एक अच्छा रिश्ता सुझाया है। एक लाख रुपयों से अधिक धन-राशि दहेज में देंगे। पर कन्या का रंग काला है। काली हुई भी तो क्या हुआ, उसके रंग से, उसकी सुंदरता से हमें क्या लेना-देना है!"

"तो क्या इसका मतलब यह है कि जो काली होती है, वह सुंदर नहीं होती? तुम्हारी ही बात लो।" रंगनाथ ने कहा। सरला हँसकर कुछ कहने ही वाली थी कि इतने में रंगनाथ ने फिर कहा, "कल रामापुर से राजेश्वर नामक एक व्यक्ति आया। हमारे बेटे ने उसकी बेटी को किसी शादी के अवसर पर देखा था और वह उसे बहुत अच्छी लगी थी। राजेश्वर का कहना है कि हम उसकी बेटी को एक बार देख लें तो अच्छा होगा।"

सरला पति को एकटक देखती रह गयी। उनका बेटा शहर में अच्छी-खासी नौकरी कर रहा है। लड़की पहले से ही अच्छी लगे, सुंदर लगे तो कौन ऐसे माता-पिता होंगे, जो बड़ी मात्रा में दहेज देने के लिए तैयार होंगे?

"आप अकेले जाइये और लड़की को देख

- निर्मला जायसवाल -

आइये। वे कम से कम लाख रुपये दहेज में देने को तैयार होंगे, तब जाकर मैं लड़की को देखूँगी,'' सरला ने थाली में ही हाथ धोते हुए कहा।

रंगनाथ चार दिनों के बाद रामापुर गया। उसने लड़की देखी। वह बहुत ही सुंदर थी और सुशील भी लगती थी। परिवार भी काफ़ी अच्छा था। पर उसके पिता दहेज देने की स्थिति में नहीं थे। उसने उनसे अपना इरादा साफ़-साफ़ बता दिया, ''हमें कम से कम एक लाख रुपयों का दहेज चाहिए।'' फिर वह वहाँ से लौट पड़ा।

चलते-चलते अंधेरा छा गया और ज़ोर की बारिश भी होने लगी। तब तक रंगनाथ गाँव की सरहद पर पहुँच चुका था। उसने वहाँ खपरैल का एक पुराना घर देखा तो सोचा कि वर्षा जब तक थम न जाए तब तक वहीं ठहर जाऊँ। उसने वहाँ जाकर दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला।

उसने वहाँ देखा कि एक दुबला पतला बूढ़ा आदमी हाथ में दीप लिये खड़ा है। उसकी बड़ी लम्बी सफेद दाढ़ी भी है।

''लगता है, बारिश थमनेवाली नहीं है। और ज्यादा होने के आसार भी दिखते हैं। क्या आज की रात आपके घर में गुज़ार सकता हूँ।'' रंगनाथ ने सकपकाते हुए उस बूढ़े आदमी से पूछा।

''मुझे इसमें कोई एतराज नहीं है। आश्रय तो दे सकता हूँ पर भोजन खिला नहीं सकता। इस घर में कोई औरत नहीं है,'' रंगनाथ को अंदर ले जाते हुए बूढ़े ने कहा।
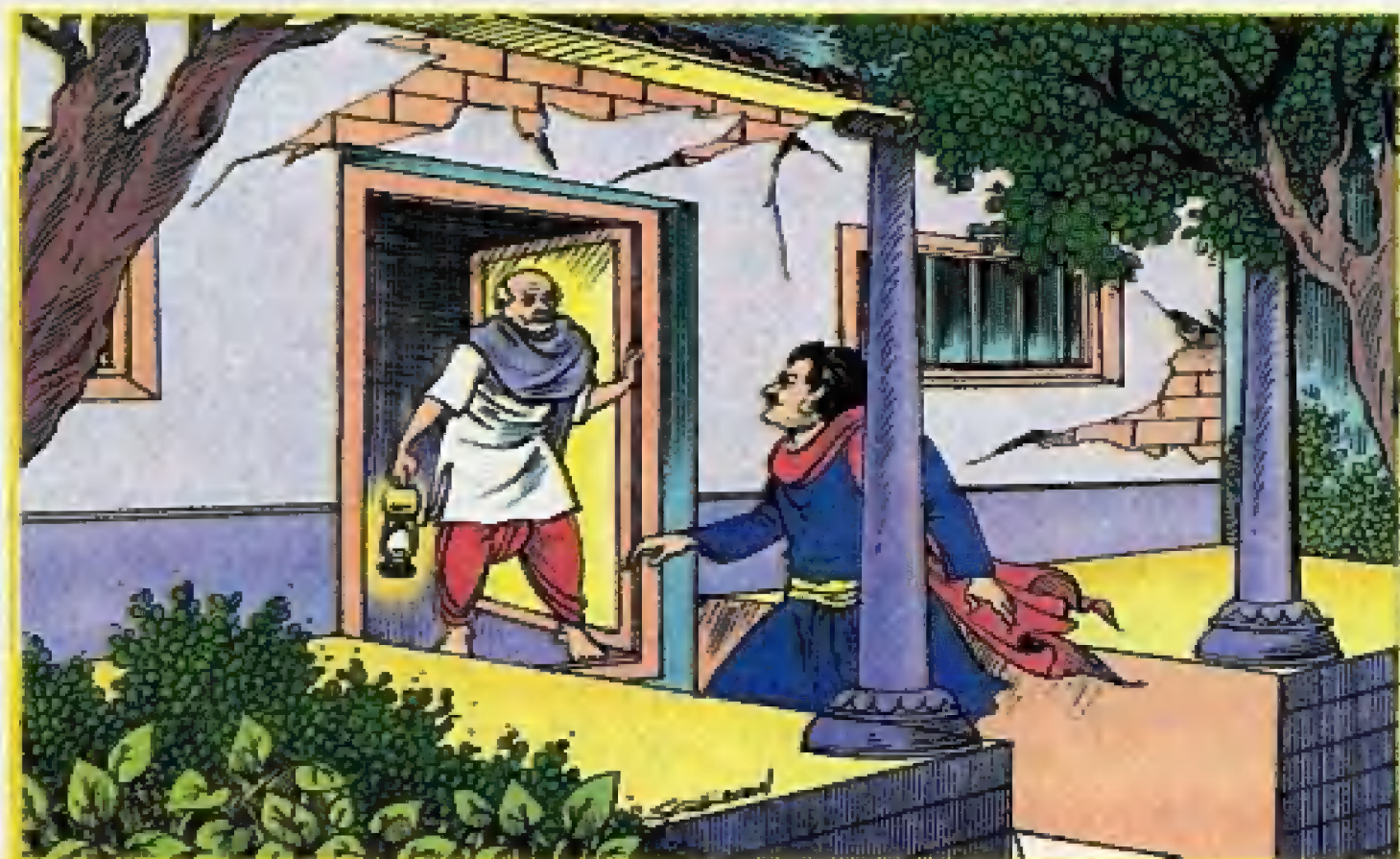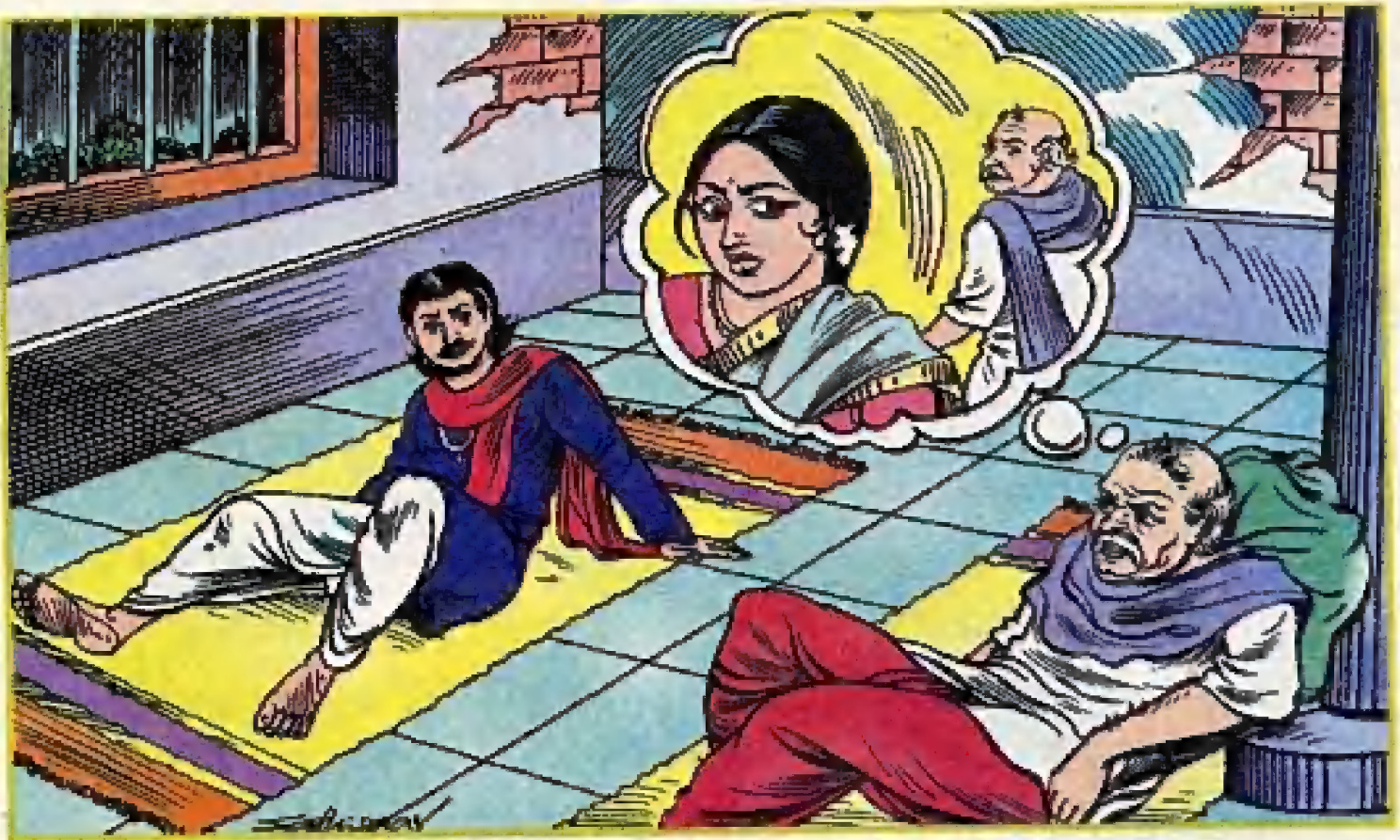
बीच कमरे में बूढ़े ने दो चटाइयाँ बिछायीं और कहा, ''मेरा नाम भूषण है। आपका नाम? किस काम पर इस गाँव में आना हुआ?''

रंगनाथ ने चटाई पर लेटते हुए कहा, ''मैं सीतापुर का हूँ। रामापुर से आ रहा हूँ। देखने में आप बड़े अनुभवी लग रहे हैं। इसलिए मैं आपसे कोई बात छिपाना नहीं चाहता।'' फिर उसने पूरी बात उसे बता दी।

''पर आप बता रहे थे कि आपके बेटे को वह लड़की अच्छी लगी,'' भूषण भी चटाई पर लेटते हुए बोला।

''तो क्या हुआ? लड़की का बाप जब दहेज देने की हालत में नहीं है तो हम कर भी क्या सकते हैं?'' कहता हुआ रंगनाथ ज़ोर से हँस पड़ा।

भूषण थोड़ी देर तक चुप रह गया और फिर कहा, ''क्या आप जानते है कि इस उम्र में मैं एक अनाथ की तरह क्यों जीवित रह रहा हूँ?''

रंगनाथ ने 'न' के भाव में सिर हिलाया।

''तो सुनिये। मैंने ज़ोर देकर अपने बेटे की शादी पर दहेज लिया। उसकी वजह से मेरी बहू के पिता को अपने पुरखों का घर बेच डालना पड़ा। इस बात पर मेरी बहू मुझसे बहुत नाराज़ हो गई। मेरे प्रति उसका व्यवहार बड़ा ही कठोर रहने लगा। मेरा बेटा तो उसके हाथ की कठपुतली था। मेरी पत्नी क्या मरी, मेरी हालत और बदतर हो गयी। यह मुझसे सहा नहीं गया और अपने रिश्तेदारों के इस पुराने घर में आकर रहने लगा हूँ। रसोई पकाकर खाना खिलानेवाला भी कोई रह नहीं गया। एकदम अनाथ हूँ। अकेला हूँ और दिन गिनगिनकर काट रहा हूँ।'' कहते हुए उसने

चादर से अपना मुख ढक लिया।

यह सुनकर रंगनाथ हक्का-बक्का रह गया। उसके मुँह से एक भी बात नहीं निकली। कहीं आधी रात को थोड़ी-सी नींद आयी। सबेरे उठकर देखा तो वहाँ भूषण नहीं था।

रंगनाथ घर से निकल पड़ा। सामने एक बूढ़ी औरत बबूल के पेड़ के फल तोड़कर बकरियों को खिला रही थी। उसने रंगनाथ को देखकर पूछा, ''आप कौन है? क्या पूरी रात उस उजड़े घर में ही रहकर बितायी? इतनी हिम्मत?''

रंगनाथ की समझ में नहीं आया कि बूढ़ी क्या कह रही है और क्या कहना चाहती है। तो उसने कहा, ''कर भी क्या सकता था। जोर से बारिश हो रही थी। उस घर में शरण लेनी ही पड़ी। पर तुम जानती हो, वह साफ़ दाढ़ीवाला बूढ़ा आदमी कहाँ चला गया?''

यह सुनते ही बुढ़िया के हाथ से बेंत की छड़ी नीचे गिर गयी और आश्चर्य-भरे स्वर में कहने लगी, ''तब तो गाँव के लोगों की बात सच निकली। वे कहते रहते हैं कि दहेज के पीछे पागल हुआ भूषण भूत बन गया और यहीं कहीं रहता है। एक साल पहले इसी घर में उसकी मौत हो गई।''

रंगनाथ को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। रात भर उसने एक भूत के साथ बिताया, यह सोचते ही उसकी रीढ़ में कंपकंपी होने लगी। उसी क्षण वह एक निर्णय पर पहुँच गया। उधर से गुज़रती हुई किराये की गाड़ी को बुलाया और उसमें बैठ गया।

थोड़ी देर बाद भूषण पेड़ के पीछे से बाहर आया और बूढ़ी से कहा, ''दीदी, मैंने जैसा कहा, वैसा ही तुमने किया। मेरी कही सारी बातें तुमने बहुत अच्छी तरह से दुहरायीं। दहेज के पीछे पागल होकर वह भी मेरी तरह अपने को दुस्थिति में नहीं ढकेलेगा।''

''मैंने पुण्य का काम किया? वह कैसे? तुम्हें क्या पता कि दहेज का पागलपन उससे छूट गया?'' बूढ़ी ने पूछा।

''देखती नहीं हो! वह किराये की गाड़ी को घुमाकर रामापुर की तरफ़ जा रहा है।'' भूषण ने उत्साह-भरे स्वर में कहा।
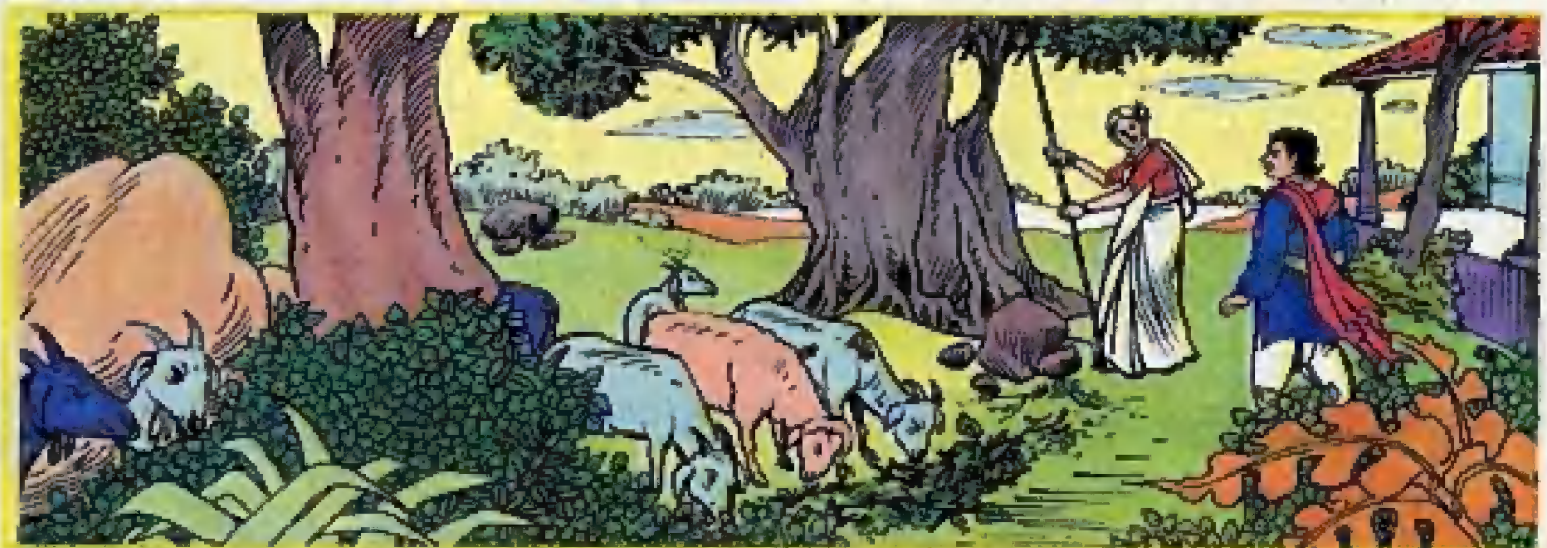
# ज्ञानी, अज्ञानी, मूर्ख

पंडित शिवानंद अपने गुरुकुल में शिष्यों को केवल शास्त्र-विद्याएँ ही नहीं सिखाते थे बल्कि साथ-साथ लौकिक ज्ञान की भी शिक्षा देते रहते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि हम कितने ही शास्त्रों का गंभीर अध्ययन क्यों न करें, पर जीवन में उपस्थित होनेवाली समस्याओं के परिष्कार के लिए लौकिक ज्ञान का होना नितांत आवश्यक है। तभी जीवन में स्थिर शांति स्थापित हो सकती है।

एक दिन सूर्योदय के समय औषधियों के लिए उपयोग में लायी जानेवाली जड़ी-बूटियों को लाने के लिए वे अपने तीन शिष्यों के साथ जंगल में गये। उन तीनों में से दो हाल ही में उनके गुरुकुल में शिक्षा पाने के लिए भर्ती हुए थे।

शिवानंद स्वामी के पीछे-पीछे आ रहे एक नये शिष्य ने उनसे पूछा, ''स्वामी, एक सप्ताह पहले मैंने आपसे पूछा था कि ज्ञानी, अज्ञानी व मूर्ख में क्या अंतर है? तब आपने उचित समय पर इसका उत्तर देने का वचन दिया था।''

शिवानंद स्वामी चुप रहे। उन्होंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उन तीनों में से जो पुराना शिष्य था, वह नये शिष्य पर नाराज़ होते हुए कह रहा था, ''गुरुजी क्या नहीं जानते कि उत्तर कब और किस समय देना चाहिए?''

नये शिष्यों में से दूसरे शिष्य ने उसका विरोध करते हुए कहा, ''गुरुजी अनेक विषयों पर प्रकाश डालते रहते हैं। हो सकता है, वे हमारे प्रश्नों का समाधान देना भूल गये हों। पर अपने संदेहों की

- चक्रपाणि -

निवृत्ति के लिए उन्हें याद दिलाना थोड़े ही कोई अपराध है !''

शिवानंद स्वामी जीवन की मुख्य समस्याओं पर यथासाध्य प्रत्यक्ष उदाहरणों के द्वारा प्रकाश डालते रहते थे।

गुरु-शिष्यों ने आवश्यक जड़ी-बूटियों को इकट्ठा किया। दोपहर होते-होते वे विश्राम करने एक वृक्ष के साये में बैठ गये।

उसी समय पास के एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने तीन मुसाफ़िर आये। उनके कंधों पर भारी थैलियाँ लटक रही थीं। तीनों अधेड़ उम्र के थे। तीनों ने थैलियाँ अपने कंधों से उतारीं और ज़मीन पर रखते हुए चारों ओर देखा। उनमें से एक ने पास ही के पेड़ के पास एक बिल देखा और डरता हुआ बोला, ''देखा वह बिल? हम तो थके-मांदे हैं। पता नहीं, हम नींद की गोद में कब चले जायेंगे। कोई सांप आ जायेगा और हमें डंस लेगा। जागे रहना भी हमारे लिए संभव नहीं।''

''हम तीनों यहाँ विश्राम करेंगे। कोई सांप आ भी जाए तो तीनों मिलकर उसे मार डालेंगे।'' थैली में से चादर निकालते हुए दूसरे मुसाफिर ने कहा।

इस पर पहले मुसाफ़िर ने कहा, ''तुम कुछ भी कहो, मैं यहाँ नहीं लेटूँगा। कहीं और जाकर विश्राम करेंगे। चलो।'' वहाँ से निकलते हुए उसने कहा।

तब तक चुप तीसरे मुसाफ़िर ने कहा, ''जल्दबाजी मत करो। जंगल में कोई ऐसी एक भी जगह नहीं होती, जो ख़तरे से ख़ाली हो। ऐसी जगह पर हमें आराम लेना होगा, जहाँ ख़तरा कम है। मुझे तो लगता है कि वह बाम्बी सांपों की नहीं है।'' तीसरे मुसाफ़िर ने अपना संदेह व्यक्त किया।

''तुम भी क्या कहने लगे? सामने सांप की बाम्बी दिखायी दे रही है और यह मानने से तुम इनकार कर रहे हो। यह अद्वैत तुमने कब से, कहाँ से सीख लिया? उसने कड़वे स्वर में कहा।

उनकी बातों पर तीसरा मुसाफ़िर मुस्कुराता हुआ बोला, ''शांत हो जाओ। मेरा कहा ध्यान से सुनो। हर बिल में सांप नहीं रहता, यह अनुभव से प्राप्त ज्ञान है। वह अवश्य चींटियों का बिल होगा।''

इसपर दूसरे मुसाफिर ने आश्चर्य प्रकट करते

हुए कहा, "क्या खूब कहा ! तुम कैसे कह सकते हो कि वह सांप का बिल नहीं है?"

"तो सुनो। जहाँ वह बिल है, उसी के पास एक पेड़ भी है। कितने ही पक्षियों के घोंसले उस पर हैं। वे भी हमारी ही तरह अपनी रक्षा का ध्यान रखते हैं। प्रकृति के हर प्राणी में साधारणतया भय तो होता ही है। अगर सचमुच वह सांप का बिल होता तो पक्षी अपने घोंसले वहाँ नहीं बनाते और न बच्चे पैदा करते," कहते हुए तीसरे मुसाफ़िर ने अपनी थैली में से चादर निकाली और लेट गया।

उन तीनों की बातचीत शिवानंद स्वामी के साथ-साथ तीनों शिष्यों ने भी सुनी। गुरु ने अपने नये शिष्य से पूछा, "बता सकते हो, उन तीनों में से तुम्हें कौन ज्ञानी, अज्ञानी और मूर्ख लगा?"

शिष्य ने विनयपूर्वक कहा, "समझ नहीं पाया गुरुवर।" फिर उन दोनों शिष्यों से भी उन्होंने यही सवाल किया। उन्होंने भी कह दिया कि वे समझ नहीं पाये।

तब शिवानंद स्वामी ने उस विषय पर सविस्तार प्रकाश डालते हुए कहा, "सांप के आने पर उसे मारा जा सकता है। हम इतने आदमी यहाँ जो हैं।" यह कहनेवाला था मूर्ख। "जब हम सोये हुए होते हैं, तब सांप ने डंस लिया तो हमारा होना, न होना नहीं के बराबर है। कहीं और जायेंगे और आराम करने के लिए जगह ढूँढ लेंगे।" यह कहनेवाला अज्ञानी है।

वह यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं कि असल में कोई ख़तरा भी है या नहीं। अगर ख़तरा हो भी तो वह कितना बड़ा ख़तरा साबित हो सकता है। अब तक तुम लोगों ने भाँप लिया होगा कि इन तीनों में से कौन ज्ञानी है। परिस्थितियों की समीक्षा करते हुए, ख़तरे को और उसके प्रभाव को अपनी तार्किक शक्ति के आधार पर समझनेवाला ही ज्ञानी है। वही ख़तरे को भांपने और टालने में समर्थ है। तुम लोग भी उस ज्ञानी की तरह अपने शास्त्र-ज्ञान के साथ-साथ लौकिक व व्यावहारिक ज्ञान को भी मिलाकर उपयोग में लाओगे तो ऐसा सुखमय जीवन गुज़ार पाओगे, जहाँ उतार-चढ़ाव नहीं होंगे, विकट परिस्थितियाँ नहीं होंगी।

# स्वर्ग की प्राप्ति

एक आदमी ने लौकिक जीवन के पूरे सुख भोगे, और आखिर में स्वर्ग पाने के ख्याल से जंगल में जाकर तपस्या करने लगा।

एक दूसरा आदमी संसार से विरक्त हो जंगल में जा पहुँचा। वहाँ पर उसने देखा कि एक व्यक्ति पहले से ही आकर तपस्या कर रहा है।

तपस्या करनेवाले को देख दूसरे व्यक्ति ने सोचा कि उसकी सेवा करके वह भी स्वर्ग की प्राप्ति कर सकता है। इस विचार से दूसरे ने प्रथम व्यक्ति से पूछा, "महात्मा, आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।"

"मुझे किसी की सेवा की ज़रूरत नहीं, मेरा ध्यान भंग न करो।" यह कहकर पहले व्यक्ति ने आँखें मूँद लीं। दूसरे ने सोचा, "इस तपस्वी के तप को विघ्न से बचाना ही पुण्य है!" यह सोचकर वह भी तपस्या करने लगा।

दूसरा व्यक्ति तप करते हुए भी इस बात का ध्यान रखने लगा कि कोई पशु या पक्षी तपस्वी के तप में विघ्न न डाले। अगर कोई पशु-पक्षी वहाँ आ जाता तो उन्हें वह दूर भगाने लगता। पहला व्यक्ति दूसरे की चिंता किये बिना ही अपनी तपस्या में लीन हो गया था।

एक दिन एक धोबी उस जंगल में आया और उन तपस्वियों के निकट एक अच्छे तालाब को देखकर उसमें कपड़े धोने लगा।

धोबी के कपड़े धोने से दोनों तपस्वियों के तप में विघ्न पैदा हो गया। पहले तपस्वी ने आँखें खोलकर देखा और धोबी पर मन ही मन खीझ उठा। मगर उसने अपना विचार बदल दिया और फिर वह तपस्या में लीन हो गया।

मगर दूसरे तपस्वी ने क्रोध में आकर धोबी को डाँटा, "अरे मूर्ख! तेरी अक्ल कहाँ चरने गयी है? तुम यहाँ पर कपड़े धोकर हमारे तप में विघ्न डालते हो? यहाँ से तुरंत दूर चले जाओ।"

- संपत राय -

"महाशय, तुम्हारी तपस्या से मेरे परिवार का पेट थोड़े ही भरनेवाला है ! जाओ, मुझे अपना काम करने दो।" यों धोबी ने लापरवाही से जवाब दिया और फिर उसने कपड़े धोना शुरू कर दिया।

दूसरा तपस्वी रोज़ धोबी के साथ झगड़ा करता रहा, मगर धोबी उस तालाब को छोड़ कहीं जाता न था।

कुछ दिन बाद वह धोबी मर गया। दूसरे तपस्वी ने भी अपनी इहलीला समाप्त कर दी। कुछ दिन बाद पहला तपस्वी जब अपना देह-त्याग कर स्वर्ग को जा रहा था, तो उसने दूसरे तपस्वी को नरक में यातनाएँ झेलते देखा।

तब दूसरे तपस्वी ने पहले तपस्वी से पूछा, "महाशय, मुझे भी अपने साथ स्वर्ग में क्यों नहीं ले जाते? मैंने आपकी बड़ी सेवा जो की है?" इसके बाद पहला तपस्वी स्वर्ग में पहुँचा। वहाँ पर उसे स्वर्ग का सुख भोगनेवाला धोबी दिखायी दिया। इस पर उस तपस्वी ने अपने साथ चलनेवाले देवदूत से पूछा, "मेरे साथ तपस्या करनेवाला नरक में क्यों है? और हमारे तप में विघ्न डालनेवाले इस धोबी को स्वर्ग की प्राप्ति कैसे हो गयी है?"

इस पर देवदूत ने समझाया, "इस धोबी ने तुम्हारी तपस्या के शीघ्र सफल होने में मदद पहुँचायी है। इसने कपड़े धोते हुए जो ध्वनि की, उससे तुम अधिक एकाग्रता प्राप्त कर सके। इस धोबी ने कोई पाप नहीं किया है। बल्कि उसने अपने परिवार का ईमानदारी से और परिश्रमपूर्वक पालन पोषण करके अपना कर्तव्य-पालन किया है। इसीलिए उसे स्वर्ग की प्राप्ति हुई। पर तुम्हारे अनुचर ने कोई तपस्या नहीं की, उसका मन चंचल था। वह यह सोचकर पशु-पक्षियों को मार भगाता और धोबी के साथ झगड़ता था कि वह तुम्हारी तपस्या को भंग होने से बचा रहा है। इसीलिए उसे स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हुई। उसने मन पर नियंत्रण नहीं किया। एकाग्रता की शक्ति नहीं बढ़ाई। इच्छाओं का दमन नहीं किया। ईश्वर पर ध्यान नहीं लगा। इसीलिए उसे नरक मिला।"

अपनी सृजनशीलता का प्रयोग करो और इनाम जीतो

अपनी रचना भेजने के लिए बच्चों को आमंत्रण

# बाल विशेषांक में

**(नवम्बर २००२ अंक)**

**तरुण लेखकों के लिए :** आकर्षक शीर्षक के साथ अधिक से अधिक ५०० शब्दों की अपनी मौलिक कहानियाँ भेजो। प्रविष्टियाँ अंग्रेज़ी, हिन्दी, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड़, तमिल या मलयालम में भेजी जा सकती हैं। तुम अधिक तीन प्रविष्टियाँ भेज सकते हो। सर्वोत्तम प्रविष्टियाँ सभी बारह भाषाओं के संस्करणों में नवम्बर माह के बाल विशेषांक में प्रकाशित की जायेंगी।

**तरुण कलाकारों के लिए :** भारतीय पुराण/इतिहास की किसी प्रसिद्ध घटना (लिखकर समझाइये) पर आधारित अधिक से अधिक तीन चित्र भेज सकते हैं। चुनिन्दा कलाकारों को विशेषांक के लिए चुनी गई कहानियों/प्रसंगों पर चित्र बनाने के लिए यात्रा व्यय के साथ चेन्नई आमंत्रित किया जायेगा।

**अन्तिम तिथि : ३१ अगस्त २००२**

**आकर्षक इनाम**

**फोटो :** कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ एक पासपोर्ट आकार का चित्र संलग्न कीजिए।

(कृपया नीचे दिये गये कूपन को काटिये, उसे भरिये और अपनी प्रविष्टि केसाथ संलग्न कीजिए।
अपनी प्रविष्टि इस पते पर भेजिए : **बाल विशेष प्रतियोगिता**, चन्दामामा इंडिया लि.,
८२, डिफेंस आफिसर्स कॉलोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.)

नाम : .................................................... आयु/जन्म तिथि : ..............................

कक्षा : .................. विद्यालय का नाम : ........................................................

घर का पता : ..............................................................................................

..............................................................................................................

.............................................................. पिनकोड : ...............................

प्रविष्टि का विवरण :

1. ..........................................................................

2. ..........................................................................

3. ..........................................................................

मैं एतद द्वारा प्रमाणित करता/करती हूँ कि ऊपरी लिखित प्रविष्टियाँ मेरे पुत्र/पुत्री की मौलिक और स्वतंत्र रचनाएँ हैं। मैं चयनित प्रविष्टियों पर चन्दामामा के पूर्ण प्रकाशनाधिकार होने तथा किसी भाषा में मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में उनके प्रयोग किये जाने में मुझे आपत्ति नहीं है।

प्रतियोगी के हस्ताक्षर      अभिभावक के हस्ताक्षर

चन्दामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
18
चित्र : पाणि
गुफा के मंदिर में तांत्रिक नानबंधु के लिए सब कुछ उलटा-पुलटा होने से वह समझ जाता है कि किसी महान शक्ति ने उसकी योजना को विफल कर दिया है। जब तांत्रिक 'गरुड़' का नाम लेता है तब नरेन्द्रदेव भौंचक रह जाता है। उसे सलाह दी जाती है कि वह मंदिर के परिसर में ही रहे और अपने बेटे रवींद्रदेव को बुला ले। तांत्रिक चाहता है कि वह अपनी सुरक्षा के हित में राज्य से बाहर रहे।
आप्त पुरुष रवीन्द्रदेव को अपने साथ ले आने के लिए तैयार हो जाता है।

आप्त पुरुष चाँदनी नदी के किनारे शिविर में रवीन्द्रदेव से मिलता है। वह आदित्य की खोज में है।
अभी आदित्य को भूल जाओ। तुम्हें यथाशीघ्र पर्वतीय गुफाओं में अपने पिता के पास अवश्य चले जाना चाहिए। तांत्रिक तुम्हारे लिए खतरा देख रहा है।
कैसे भूल सकता हूँ? मेरे चन्द्रपुरी का राजा बनने में वह सबसे बड़ी रुकावट है। ठीक है...

पर्वतीय गुफाओं में मेरे जाने के लिए तैयारी करो !
तुम लोगों में से कुछ क़िले में वापस जाओ और यदि आदित्य राजधानी में लौट आता है तो उसे महल में जाने से रोको।

आदित्य पुनर्वास उपनिवेश में पहुँचता है जहाँ उसका भारी स्वागत किया जाता है।
आप लोगों के लिए शुभ समाचार लाया हूँ!
मंत्रीजी का पुनः स्वागत है!
हम लोग आपका अभाव अनुभव कर रहे थे।
हम लोगों के राजा राजधानी पहुँच रहे हैं। राम सिंह उनके साथ हैं। नरेन्द्रदेव और उसका बेटा उनका तख्ता पलटने का कुचक्र रच रहे हैं। हमें इन विद्रोहियों से उनकी रक्षा अवश्य करनी चाहिए।

आदित्य उपनिवेश के तरुणों को एक विशिष्ट सलाह देता है।
आप लोगों को अत्याचारियों और महल के विद्रोहियों के विरुद्ध अवश्य खड़ा होना चाहिए। और राज के लिए निरापद मार्ग सुनिश्चित करना चाहिए।
हम लोग राजा और उनके राज्य के लिए अपने जीवन की आहुति देने के लिए तैयार हैं।

उनमें से कुछेक आदित्य के साथ जाने के लिए अपनी सेवा अर्पित करते हैं...
और कुछ राजा की यात्रा के मा में अपने-अपने स्थान पर तैना हो जाते हैं।

जब तक आदित्य किला तक पहुँचता है, उसके पीछे स्वयंसेवकों की एक लम्बी कतार खड़ी हो जाती है।
ठहरो ! और सुनो !
हमें क़िले के सभी बहिद्वारों को अवरुद्ध करना होगा जहाँ से महल के राजभक्त रक्षकों को हटा दिया गया है।

आदित्य मुट्ठी भर युवकों को लेकर महल में जाता है और रवीन्द्रदेव को सन्देश भेजता है।
हर विरोध का सामना करने के लिए तैयार रहो।
हम लोग महल में किसी तरह प्रवेश कर जायेंगे।
समूह का नेता मुख्य रक्षक के साथ लौटता है।
महोदय, राजकुमार और कमाण्डर दोनों राजधानी में नहीं हैं।
यदि यह सत्य है तो...

...तो आत्म समर्पण कर दो और किले को छोड़ दो।
महल के रक्षकों का कमान लौटता है।
हमारे अधिकांश आदमियों ने हथियार डाल देने की सहमति दे दी है।
जिन्होंने विरोध किया, उन्हें वश में कर लिया गया।
क्रमशः

# मजे करें !

## एक में इतने मजे !

बस, एक चित्र और करने को ढेर सारे काम ! चित्र में पहले रंग भरो। फिर पता लगाओ कि चींटी चाची के चित्र में क्या गड़बड़ है। और अंत में, पर कम महत्व का नहीं, यह पता लगाओ कौन-से दो भृंग एक समान हैं?

## सिर्फ एक घसीट

क्या यह विस्मयकारी हंस नहीं है? क्या जानते हो इसमें अनोखी बात क्या है? इसे कागज पर से पेंसिल हटाये बिना चित्रित किया गया है। क्यों नहीं तुम प्रयास करते?

## चींटीदार चित्रण

क्या तुम कलाकार बनना चाहोगे? चींटी का चित्र बनाने के लिए बस तुम्हें सरल संकेतों का पालन करना है।
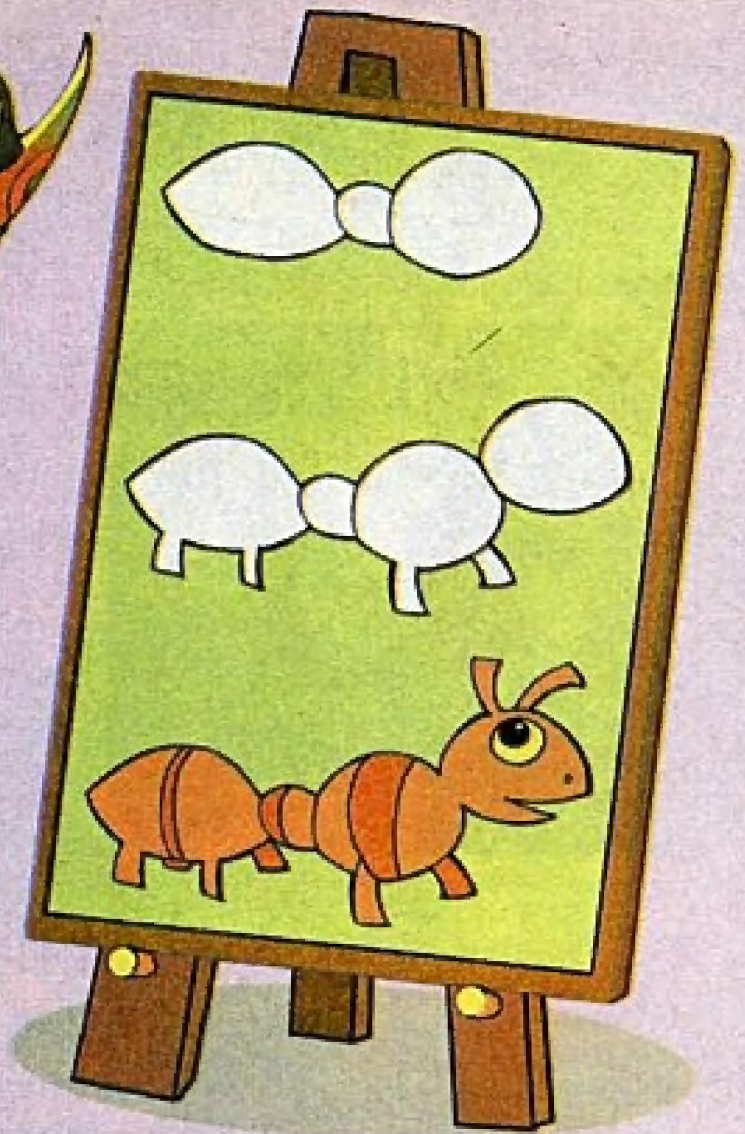
## मजेदार पापा

इस वृद्ध सज्जन की एक लम्बी रोयेंदार दाढ़ी है। है न? जरा गौर से देखो। इसमें कितने प्राणी छिपे हुए हैं। तुम कितनों को पहचान सकते हो?

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

# चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

**क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?**

*चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,*

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

## बधाइयाँ

जून अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

**पर्याय उपाध्याय,**

१९/१९, नॉर्थ टी/टी नगर,

जवाहर चौक, भोपाल - ४६२ ००३.

विजयी प्रविष्टि
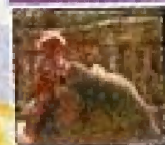
नन्दी पर मैं करूँ सवारी।
नहीं चाहिए मोटर की प्रदूषण गाड़ी॥

**आओ, अब मजे करें ! (पृष्ठ ६४) के उत्तर**

**एक में इतने मजे !**

चींटी चित्र में एक पाँव लुप्त है।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) AUGUST 2002 Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002